CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/1/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं । अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी । महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे । मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था । विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है । आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं । ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं । एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ आँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए । दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है । इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते । और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है ? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है ।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है । ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है । साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं । जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है । अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है । क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं ।

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [15 अंक]

1(क). गद्यांश में अकबर का उदाहरण क्यों दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: उदाहरण का प्रयोजन गद्यांश का आरंभ बताता है कि बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर विकसित होती हैं। अकबर का प्रसंग इसी कथन के समर्थन में आया है।

चरण 2: व्याख्या और आधार अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ और उस समय उसके पिता के पास एक कस्तूरी के अतिरिक्त कोई संपत्ति नहीं थी। इस अभाव और कठिन परिस्थिति ने उसके व्यक्तित्व को संघर्ष के लिए तैयार किया। फलतः उसने तेरह वर्ष की अवस्था में अपने पिता के शत्रु को परास्त कर दिया। इस प्रसंग का मूल संदेश यही है कि कठिनाइयों से बचते रहने के बजाय उनका सामना करना व्यक्तित्व की शक्ति बढ़ाता है। लेखक सुरक्षित जीवन की सीमाओं और निर्भय प्रयास के महत्त्व को इसी दृष्टि से सामने रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष अकबर का उदाहरण यह स्पष्ट करने के लिए दिया गया है कि संकटों और अभावों में पलने वाला व्यक्ति साहसी तथा समर्थ बनता है और बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकता है।

त्वरित सुझाव: अकबर की कम आयु में मिली विजय को रेगिस्तान और अभाव की कठिन परिस्थितियों से विकसित साहस से जोड़ें।

1(ख). पांडवों की विजय का क्या कारण था ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: विजय का कारण गद्यांश में कौरवों की ओर अधिकतर वीर होने पर भी पांडवों की विजय का उल्लेख है। इससे बाहरी शक्ति और संकटों से मिले साहस का अंतर स्पष्ट होता है।

चरण 2: व्याख्या और आधार पांडवों ने लाक्षागृह की मुसीबत झेली और वनवास के जोखिम पार किए थे। इन्हीं अनुभवों ने उन्हें कठिनाइयों का सामना करने योग्य बनाया। उत्तर में गद्यांश का यही कारण देना चाहिए; युद्ध से जुड़े अन्य प्रसंग जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पांडवों की विजय का कारण लाक्षागृह की मुसीबत तथा वनवास के जोखिम सहकर प्राप्त किया गया साहस और संघर्ष का अनुभव था।

त्वरित सुझाव: पांडवों की विजय का कारण लिखते समय लाक्षागृह की मुसीबत और वनवास के जोखिम, दोनों अनुभव अवश्य लिखें।

1(ग). आशय स्पष्ट कीजिए –

"जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: कथन का आशय यह कथन उन लोगों के लिए है जो बड़े उद्देश्य के लिए जोखिम उठाने से बचते हैं। गद्यांश उनकी स्थिति को गोधूलि के समान बताता है।

चरण 2: व्याख्या और आधार ऐसे लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, अर्थात परिचित और सुरक्षित जीवन से बाहर नहीं निकलते। वे बड़ी सफलता पाने का साहस नहीं करते, इसलिए उन्हें उसकी प्रसन्नता भी नहीं मिलती। जोखिम न लेने के कारण वे बड़ी हार की पीड़ा से भी बचे रहते हैं। उनका जीवन उपलब्धि और संघर्ष, दोनों की तीव्र अनुभूतियों से रहित रहता है। इस प्रसंग का मूल संदेश यही है कि कठिनाइयों से बचते रहने के बजाय उनका सामना करना व्यक्तित्व की शक्ति बढ़ाता है। लेखक सुरक्षित जीवन की सीमाओं और निर्भय प्रयास के महत्त्व को इसी दृष्टि से सामने रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि जोखिम से बचकर सीमित जीवन जीने वालों को न महान विजय का आनंद मिलता है और न बड़ी हार का दुख; उनका जीवन उत्साह और संघर्ष की तीव्रता से वंचित रहता है।

त्वरित सुझाव: जीत के हँसने और हार के रोने को बड़ी सफलता तथा असफलता के रूपक मानकर जोखिमरहित जीवन का आशय खोलें।

1(घ). साहस की ज़िंदगी को सबसे बड़ी जिंदगी क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: साहस का महत्त्व गद्यांश में साहस को जीवन का सबसे बड़ा गुण कहा गया है। लेखक के अनुसार मनुष्य के अन्य गुण भी उसके हिम्मती होने से विकसित होते हैं।

चरण 2: व्याख्या और आधार साहसी व्यक्ति निडर होकर बड़े उद्देश्य की ओर बढ़ता है। अँधेरा और कठिनाइयाँ उसे पीछे नहीं हटा पाते। वह तमाशा देखने वालों की राय की चिंता में अपना संकल्प नहीं छोड़ता। इस तरह वह जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करता है और अपने कर्म से मानवता को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस प्रसंग का मूल संदेश यही है कि कठिनाइयों से बचते रहने के बजाय उनका

सामना करना व्यक्तित्व की शक्ति बढ़ाता है। लेखक सुरक्षित जीवन की सीमाओं और निर्भय प्रयास के महत्त्व को इसी दृष्टि से सामने रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहस की जिंदगी सबसे बड़ी है, क्योंकि वह भय और जनमत के दबाव से मुक्त होकर महान लक्ष्य के लिए संघर्ष करती है तथा मनुष्यता को दिशा और प्रकाश देती है।

त्वरित सुझाव: साहसी जिंदगी की महानता बताते समय निर्भयता और मनुष्यता को दिशा देने की क्षमता, दोनों बातों को साथ रखें।

1(ङ). दुनिया की असली ताकत किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: वास्तविक शक्ति की पहचान गद्यांश में जनमत की उपेक्षा करके जीने वाले साहसी व्यक्ति को दुनिया की असली ताकत कहा गया है। यहाँ आशय अपने उद्देश्य पर निर्भय होकर टिके रहने से है।

चरण 2: व्याख्या और आधार ऐसा व्यक्ति यह चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। वह दूसरों की चाल देखकर अपनी गति धीमी नहीं करता और बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है। उसकी स्वतंत्र संकल्पशक्ति समाज को नई दिशा देती है। लेखक इसी कारण कहता है कि मनुष्यता को प्रकाश ऐसे ही व्यक्ति से मिलता है। इस प्रसंग का मूल संदेश यही है कि कठिनाइयों से बचते रहने के बजाय उनका सामना करना व्यक्तित्व की शक्ति बढ़ाता है। लेखक सुरक्षित जीवन की सीमाओं और निर्भय प्रयास के महत्त्व को इसी दृष्टि से सामने रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष दुनिया की असली ताकत वह साहसी व्यक्ति है जो जनमत के भय से विचलित हुए बिना अपने उद्देश्य के लिए जीता है, क्योंकि वही मनुष्यता को प्रेरणा और प्रकाश देता है।

त्वरित सुझाव: किसे और क्यों, दोनों का उत्तर दें: जनमत से निर्भय व्यक्ति की पहचान के बाद उससे मिलने वाले प्रकाश का कारण लिखें।

1(च). क्रांतिकारियों के क्या लक्षण हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: क्रांतिकारी व्यक्तित्व गद्यांश क्रांतिकारियों को साधारण अनुकरण करने वाले लोगों से अलग बताता है। उनकी पहचान अपने उद्देश्य और गति के प्रति स्वतंत्र निष्ठा है।

चरण 2: व्याख्या और आधार क्रांतिकारी अपने उद्देश्य की तुलना पड़ोसी के उद्देश्य से नहीं करते। वे यह देखकर अपनी चाल धीमी भी नहीं करते कि दूसरे कितनी गति से चल रहे हैं। उनका निर्णय आसपास के लोगों की सुविधा या राय पर निर्भर नहीं होता। निर्भयता और लक्ष्य के प्रति दृढ़ता उन्हें परिवर्तन के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रांतिकारी निर्भय और उद्देश्यनिष्ठ होते हैं। वे न दूसरों से अपने लक्ष्य की तुलना करते हैं, न दूसरों की धीमी गति देखकर अपनी चाल मद्धिम बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: क्रांतिकारियों के दो सीधे लक्षण चुनें: अपने उद्देश्य की स्वतंत्रता और पड़ोसी को देखकर अपनी गति धीमी न करना।

1(छ). ज़िंदगी की कौन सी सूरत आपको अच्छी लगती है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: पक्ष और तर्क प्रश्न अपनी पसंद बताने के साथ उसका कारण भी माँगता है। गद्यांश में एक ओर बड़े लक्ष्य के लिए जोखिम उठाने का जीवन है और दूसरी ओर सीमित, सुरक्षित जीवन है।

चरण 2: व्याख्या और आधार मुझे पहली सूरत अच्छी लगती है, क्योंकि उसमें बड़े उद्देश्य के लिए निरंतर प्रयास और कठिनाइयों से जूझने का अवसर मिलता है। साहस से व्यक्तित्व के अन्य गुण विकसित होते हैं। हार की संभावना के बावजूद आगे बढ़ने में जीवन का आनंद है। ऐसा जीवन केवल अपने लिए उपलब्धि पाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दूसरों को भी प्रेरित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुझे साहस और संघर्ष से भरी जिंदगी अच्छी लगती है, क्योंकि बड़े लक्ष्य के लिए निर्भय प्रयास करने से व्यक्तित्व विकसित होता है, उपलब्धि का आनंद मिलता है और समाज को प्रेरणा मिलती है।

त्वरित सुझाव: पहले साहस भरी जिंदगी की अपनी पसंद स्पष्ट करें, फिर व्यक्तित्व-विकास और बड़े उद्देश्य के तर्क उससे जोड़ें।

1(ज). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के संकेतों के आधार पर सटीक उत्तर देना आवश्यक है।
- प्रसंग के केंद्रीय विचार और पूछे गए बिंदु में स्पष्ट संबंध होना चाहिए।

चरण 1: शीर्षक का चयन शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त परिचय देता है। इस गद्यांश के उदाहरण और विचार साहस के महत्त्व पर केंद्रित हैं।

चरण 2: व्याख्या और आधार अकबर और पांडवों के उदाहरण बताते हैं कि संकट साहस का विकास करते हैं। आगे लेखक निर्भय जीवन, बड़े लक्ष्य और जनमत की चिंता से मुक्त संकल्प की प्रशंसा करता है। इसलिए किसी एक उदाहरण को शीर्षक बनाना पर्याप्त नहीं होगा। ऐसा शीर्षक उपयुक्त है जो पूरे विवेचन के मुख्य गुण को समेट ले।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: साहस की जिंदगी।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में साहस को केंद्र रखें; केवल अकबर या पांडवों का नाम पूरे गद्यांश का भाव नहीं समेटता।

1(झ). निडर और बेखौफ़ में प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मूल शब्द के पहले जुड़ने वाले सार्थक शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं।
- उपसर्ग अलग करते समय मूल शब्द की पहचान भी की जाती है।

चरण 1: उपसर्ग की पहचान उपसर्ग वह शब्दांश है जो मूल शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन करता है। यहाँ दोनों शब्दों में भय के अभाव का भाव व्यक्त होता है।

चरण 2: दोनों शब्दों का विश्लेषण निडर में मूल शब्द डर है और उसके पहले नि उपसर्ग लगा है। बेखौफ़ में मूल शब्द खौफ़ है और उसके पहले बे उपसर्ग लगा है। मूल शब्दों को अलग करने पर दोनों उपसर्ग पहचाने जा सकते हैं। दोनों पूरे शब्द निर्भय व्यक्ति का बोध कराते हैं, किंतु उनके उपसर्ग अलग हैं।

चरण 3: निष्कर्ष निडर में नि और बेखौफ़ में बे उपसर्ग है।

त्वरित सुझाव: पहले डर और खौफ़ को मूल शब्द के रूप में अलग करें; उनसे पहले बचे अंश ही अपेक्षित उपसर्ग हैं।

1(ञ). मिश्र वाक्य में बदलिए – साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम से कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- रूपांतरण में मूल वाक्य का आशय सुरक्षित रहता है; केवल उसकी रचना बदलती है।

चरण 1: मूल आशय पहचानना मूल वाक्य में साहसपूर्ण जीवन को सबसे बड़ा जीवन कहा गया है। अतः रूपांतरण में साहस और जीवन की श्रेष्ठता का यही संबंध बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 2: आश्रित और प्रधान उपवाक्य बनाना साहसपूर्ण जीवन का परिचय देने के लिए “जो साहस की ज़िंदगी होती है” आश्रित उपवाक्य बनाइए। इसके साथ “वही सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है” प्रधान उपवाक्य जोड़िए। “जो” और “वही” के संबंध से मिश्र वाक्य तैयार हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो साहस की ज़िंदगी होती है, वही सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है।

त्वरित सुझाव: “जो ... वही” का प्रयोग करके विशेषता बताने वाला आश्रित उपवाक्य बनाइए और मूल अर्थ बचाइए।

2. अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में ।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर ।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई ।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना ।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण ।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई ।।
नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [5 अंक]

2(क). मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ता है और कैसे ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार काव्यांश में बताए गए नवयुवकों के गुण और निर्झर की उपमा है।
- तूफ़ानों में अचल रहना धैर्य और दृढ़ निश्चय का संकेत है।

चरण 1: रुकावटें तोड़ने वालों की पहचान वे साहसी नवयुवक मार्ग की रुकावटें तोड़ते हैं जो विपरीत परिस्थितियों में सिर ऊँचा रखकर अचल खड़े रहते हैं। उनके भीतर सहनशीलता तथा दृढ़ता है।

चरण 2: रुकावटें तोड़ने का तरीका वे निर्झर अर्थात झरने की तरह निरंतर आगे बढ़ते हैं। जिस प्रकार जलधारा बाधाओं को पार कर बहती रहती है, उसी प्रकार ये युवक कठिनाइयों से घबराए बिना अपने धैर्य और दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सहनशील और दृढ़ नवयुवक निर्झर की तरह निरंतर आगे बढ़कर मार्ग की रुकावटें तोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: "कौन" के लिए नवयुवकों के गुण और "कैसे" के लिए निर्झर की तरह बढ़ने का तरीका लिखिए।

2(ख). नवयुवक प्रगति के नाम को कैसे सार्थक करते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्रगति को कठिनाइयों पर विजय पाने की सक्रिय प्रक्रिया मानता है।
- उत्तर का सीधा आधार "प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर" है।

चरण 1: प्रगति का आशय काव्यांश में प्रगति केवल इच्छा करने या सुख-सुविधाओं में बैठे रहने से नहीं होती। उसके लिए कठिन मार्ग पर चलना और सामने आने वाली बाधाओं का सामना करना आवश्यक है।

चरण 2: युवकों के कार्य से संबंध नवयुवक अपनी सहनशीलता और दृढ़ता के बल पर दुर्गम परिस्थितियों में भी आगे बढ़ते हैं। वे मार्ग की रुकावटें तोड़कर निरंतर कर्म करते हैं; उनका यही संघर्ष प्रगति को वास्तविक रूप देता है।

चरण 3: निष्कर्ष नवयुवक दुर्गम मार्ग पर चलकर, कठिनाइयाँ सहकर और बाधाएँ दूर करते हुए आगे बढ़कर प्रगति के नाम को सार्थक करते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रगति का उत्तर लिखते समय "दुर्गमता पर चलकर" के भाव को संघर्ष और निरंतर आगे बढ़ने से जोड़िए।

2(ग). 'विगत युग के पतझर' से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पतझर और मधुमास क्रमशः क्षय तथा नए जीवन के प्रतीक हैं।
- प्रतीक का अर्थ उसके सामने रखे गए नए युग और नवजागरण के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: पतझर का प्रतीकात्मक अर्थ पतझर में वृक्षों के पत्ते झड़ते हैं और हरियाली का अभाव दिखाई देता है। इसलिए यहाँ पतझर का प्रयोग पिछले युग की जड़ता, निराशा और अवनति के लिए हुआ है।

चरण 2: काव्यांश के संदर्भ में आशय कवि युवकों से उसी पुराने, उत्साहहीन वातावरण में नया मधुमास खिलाने को कहता है। अतः "विगत युग के पतझर" का आशय बीते समय की उन निष्प्राण और पतनशील स्थितियों से है जिन्हें नई चेतना से बदलना है।

चरण 3: निष्कर्ष "विगत युग के पतझर" से आशय बीते युग की जड़ता, निराशा और अवनति से है।

त्वरित सुझाव: पतझर का अर्थ केवल मौसम न लिखिए; कविता में उसके सामने आए मधुमास से उसका प्रतीकात्मक भाव समझिए।

2(घ). कवि देश के नवयुवकों का आह्वान क्यों कर रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि नवयुवकों को देश की भावी आशा और नए युग के निर्माता के रूप में देखता है।
- आह्वान का उद्देश्य कविता में व्यक्त राष्ट्रीय जागरण से स्पष्ट होता है।

चरण 1: नवयुवकों की भूमिका कवि के अनुसार देश की भावी आशा नवयुवकों की तरुणाई है। उनमें नए जीवन की शक्ति तथा कठिनाइयों को पार करने का साहस है, इसलिए देश के भविष्य को बदलने की क्षमता उन्हीं में है।

चरण 2: आह्वान का उद्देश्य कवि चाहता है कि युवक स्वयं जागें, देश में नई चेतना जगाएँ और बीते युग की जड़ता दूर करें। वे राष्ट्र के नए युग का इतिहास रचें तथा विश्व को अपनी जागी हुई तरुणाई और कर्मशक्ति का परिचय दें।

चरण 3: निष्कर्ष कवि नवयुवकों का आह्वान देश में नई चेतना और जागरण लाने, जड़ता दूर करने तथा नए युग का निर्माण करने के लिए कर रहा है।

त्वरित सुझाव: "क्यों" का उत्तर उद्देश्य से दीजिए: युवकों को जगाना, देश को जगाना और नया इतिहास बनाना।

2(ङ). कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता का मूल भाव साहसी युवाशक्ति द्वारा राष्ट्रीय नवजागरण है।
- मूल संदेश में अलग-अलग पंक्तियों की पुनरावृत्ति के बजाय पूरे काव्यांश का केंद्रीय विचार व्यक्त किया जाता है।

चरण 1: प्रमुख विचारों को जोड़ना कविता में युवक कठिनाइयों के सामने दृढ़ रहते हैं और निर्झर की तरह निरंतर आगे बढ़ते हैं। कवि उनकी सहनशीलता और शक्ति को देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार मानता है।

चरण 2: अपने शब्दों में संदेश लिखना युवाओं को आलस्य तथा निराशा छोड़कर जागना चाहिए। उन्हें कठिनाइयों का साहस से सामना करके देश में नई चेतना फैलानी चाहिए और अपनी सक्रियता से पुराने पतनशील वातावरण को आशा तथा प्रगति में बदलना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि युवा धैर्य, दृढ़ता और साहस के साथ बाधाएँ पार करें तथा अपनी कर्मशक्ति से देश में नवजागरण लाकर उज्ज्वल भविष्य बनाएँ।

त्वरित सुझाव: मूल संदेश में युवाशक्ति, कठिनाइयों से संघर्ष और राष्ट्र के नवजागरण को एक केंद्रीय विचार में जोड़िए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

पहला सुख निरोगी काया [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय-केंद्रित निबंध में भूमिका, विचारों का क्रमबद्ध विकास और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- इस विषय का केंद्रीय विचार है कि स्वस्थ शरीर जीवन के अन्य सुखों के उपयोग का आधार है।

चरण 1: विषय और रूपरेखा पहले स्वास्थ्य का महत्त्व स्पष्ट कीजिए। फिर अस्वस्थता से होने वाली कठिनाइयाँ, संतुलित भोजन, व्यायाम, स्वच्छता, विश्राम और मानसिक संतुलन का विवेचन कीजिए। अंत में दैनिक जीवन में स्वस्थ आदतें अपनाने की प्रेरणा दीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **पहला सुख निरोगी काया**

मनुष्य जीवन में धन, सम्मान और सुविधाएँ प्राप्त करना चाहता है, किंतु इनका वास्तविक आनंद तभी मिल सकता है जब शरीर स्वस्थ हो। इसीलिए कहा गया है कि पहला सुख निरोगी काया है। स्वस्थ शरीर हमारे उत्साह, परिश्रम और आत्मविश्वास का आधार है।

बीमार व्यक्ति के सामने स्वादिष्ट भोजन और मनोरंजन के साधन भी आकर्षण खो देते हैं। बीमारी पढ़ाई तथा काम में बाधा डालती है और परिवार की चिंता बढ़ाती है। इसके विपरीत स्वस्थ व्यक्ति सीमित साधनों में भी प्रसन्न रहकर अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता है। विद्यार्थी की एकाग्रता और श्रमिक की कार्यक्षमता, दोनों का संबंध स्वास्थ्य से है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित और पौष्टिक भोजन आवश्यक है। भोजन में अनाज, दालें, फल और सब्जियाँ सम्मिलित होनी चाहिए। स्वच्छ जल पीना और समय पर भोजन करना लाभकारी है। केवल स्वाद के लिए अत्यधिक तला-भुना भोजन खाने की आदत से बचना चाहिए।

नियमित व्यायाम, खेलकूद और सैर शरीर को सक्रिय रखते हैं। पर्याप्त नींद तथा समय पर विश्राम भी उतने ही आवश्यक हैं। व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ घर और आसपास की सफाई पर ध्यान देना चाहिए। नशीले पदार्थों से दूर रहना तथा बीमारी के लक्षणों की उपेक्षा न करना समझदारी है।

स्वास्थ्य केवल शरीर तक सीमित नहीं है। निरंतर तनाव, ईर्ष्या और चिंता हमारे सुख को प्रभावित करते हैं। संतुलित दिनचर्या, सकारात्मक दृष्टि, परिवार से संवाद और रुचिकर गतिविधियाँ मानसिक प्रसन्नता बनाए रखने में सहायता करती हैं। काम और विश्राम में उचित संतुलन रखना चाहिए।

स्वस्थ रहना व्यक्तिगत जिम्मेदारी होने के साथ सामाजिक जिम्मेदारी भी है। स्वच्छ परिवेश और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक समाज सभी के जीवन को बेहतर बनाते हैं। हमें स्वास्थ्य की रक्षा को दैनिक आदत बनाना चाहिए, क्योंकि निरोग शरीर ही जीवन के अन्य सुखों का सच्चा आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वास्थ्य जीवन की मूल पूँजी है; संतुलित आहार, सक्रिय दिनचर्या, स्वच्छता, विश्राम और मानसिक संतुलन से इसकी रक्षा करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: निबंध को केवल स्वास्थ्य के लाभों तक सीमित न रखें; स्वस्थ रहने के उपाय और प्रेरक उपसंहार भी लिखें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

कम्प्यूटर का आधुनिक जीवन में महत्त्व [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबन्ध में तकनीक के उपयोग, लाभ और विवेकपूर्ण प्रयोग का संतुलित विवेचन अपेक्षित है।
- प्रस्तावना से विषय का परिचय दें, मुख्य भाग में विचारों को उदाहरण सहित विकसित करें और अंत में सार्थक निष्कर्ष रखें।

चरण 1: प्रारूप और विचार-योजना शीर्षक “कम्प्यूटर का आधुनिक जीवन में महत्त्व” रखें। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और संचार से उदाहरण चुनकर विषय को दैनिक जीवन से जोड़ें। भाषा सरल, औपचारिक और अनुच्छेदों का क्रम तार्किक रखें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है; अतः विषय का पर्याप्त और संतुलित विकास करें।

चरण 2: पूरा नमूना निबन्ध कम्प्यूटर का आधुनिक जीवन में महत्त्व

आधुनिक जीवन में कम्प्यूटर एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बन चुका है। वह जटिल गणनाएँ शीघ्र करता है, सूचनाओं को सुरक्षित रखता है और अनेक कार्यों में समय तथा श्रम बचाता है। उसके कारण काम करने और ज्ञान प्राप्त करने के हमारे ढंग में बड़ा परिवर्तन आया है।

शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने नए अवसर खोले हैं। विद्यार्थी डिजिटल पुस्तकों, शैक्षिक सामग्री और अभ्यास के माध्यम से अपनी समझ बढ़ा सकते हैं। दूर रहने वाले विद्यार्थी भी ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ सकते हैं। अस्पतालों में रोगियों का विवरण रखने, जाँच की रिपोर्ट तैयार करने और उपचार संबंधी जानकारी व्यवस्थित करने में इसका उपयोग होता है। बैंकों, कार्यालयों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में खातों, दस्तावेजों तथा लेनदेन का प्रबंधन इससे सुगम हुआ है।

इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर ने संचार को भी गति दी है। संदेश, चित्र और आवश्यक दस्तावेज दूर तक कुछ ही क्षणों में पहुँच जाते हैं। वैज्ञानिक

अनुसंधान, मौसम के अध्ययन और उद्योगों में भी कम्प्यूटर उपयोगी है। लेखन, चित्रांकन तथा संगीत जैसे रचनात्मक कार्यों में वह मनुष्य की क्षमता को विस्तार देता है।

फिर भी उसका अनियंत्रित प्रयोग उचित नहीं है। लगातार स्क्रीन देखने से स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ सकता है। निजी जानकारी की सुरक्षा और ऑनलाइन धोखाधड़ी से सावधानी आवश्यक है। कम्प्यूटर पर अत्यधिक निर्भरता से स्वतंत्र चिंतन तथा आपसी संवाद कम नहीं होना चाहिए।

अतः कम्प्यूटर का महत्त्व उसके विवेकपूर्ण उपयोग में है। वह मनुष्य का साधन है; उद्देश्य का निर्धारण मनुष्य को ही करना है। डिजिटल शिक्षा, संयम और सुरक्षा के साथ उसका प्रयोग जीवन को अधिक सुगम और उत्पादक बना सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबन्ध में "कम्प्यूटर का आधुनिक जीवन में महत्त्व" विषय का परिचय, मुख्य पक्ष और समाधान क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले भूमिका, तीन मुख्य बिंदु और निष्कर्ष की रूपरेखा बनाएँ; हर अनुच्छेद को विषय से जोड़कर रखें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

युवाओं में बढ़ता तनाव [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबन्ध में समस्या के कारण, प्रभाव तथा व्यावहारिक समाधान क्रमबद्ध रूप में रखने चाहिए।
- प्रस्तावना से विषय का परिचय दें, मुख्य भाग में विचारों को उदाहरण सहित विकसित करें और अंत में सार्थक निष्कर्ष रखें।

चरण 1: प्रारूप और विचार-योजना शीर्षक "युवाओं में बढ़ता तनाव" रखें। परीक्षा, रोजगार और सामाजिक अपेक्षाओं को कारण मानते हुए सहयोग एवं संतुलित दिनचर्या के उपाय दें। भाषा सरल, औपचारिक और अनुच्छेदों का क्रम तार्किक रखें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है; अतः विषय का पर्याप्त और संतुलित विकास करें।

चरण 2: पूरा नमूना निबन्ध युवाओं में बढ़ता तनाव

युवा जीवन ऊर्जा, आशा और संभावनाओं का समय है। फिर भी आज अनेक युवा भविष्य की अनिश्चितता और लगातार बढ़ती अपेक्षाओं के कारण तनाव अनुभव करते हैं। जब सफलता की दौड़ में विश्राम, संवाद और आत्मविश्वास पीछे छूट जाते हैं, तब सामान्य चुनौतियाँ भी बोझ लगने लगती हैं।

तनाव के अनेक कारण हैं। परीक्षाओं में अधिक अंक पाने की होड़, पसंद के पाठ्यक्रम में प्रवेश और रोजगार की चिंता युवाओं पर दबाव डालती है। कई बार परिवार तथा समाज उनकी रुचि और क्षमता समझे बिना उनसे बड़ी उपलब्धियों की अपेक्षा करते हैं। दूसरों से बार-बार तुलना करने से हीन भावना बढ़ती है। सामाजिक माध्यमों पर दूसरों की चुनी हुई सफलताओं को देखकर भी युवा अपने जीवन को कमतर समझने लगते हैं।

लगातार तनाव से एकाग्रता, नींद और व्यवहार प्रभावित हो सकते हैं। पढ़ाई में रुचि घट सकती है और मित्रों तथा परिवार से दूरी बढ़ सकती है। ऐसी स्थिति में युवा को आलसी या कमजोर कहकर दोष देना समस्या को और बढ़ाता है। उसकी बात धैर्य से सुनना और भावनाओं का सम्मान करना आवश्यक है।

इस समस्या के समाधान के लिए व्यक्तिगत तथा सामाजिक प्रयास चाहिए। युवाओं को अपनी क्षमता के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए और काम को छोटे चरणों में बाँटना चाहिए। नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, खेल तथा रचनात्मक गतिविधियाँ संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं। परिवार और शिक्षक सफलता के साथ प्रयास को भी महत्त्व दें। आवश्यकता पड़ने पर प्रशिक्षित परामर्शदाता से सहायता लेनी चाहिए।

युवाओं का मूल्य केवल अंक या वेतन से तय नहीं होता। सहयोगपूर्ण वातावरण, संवाद और यथार्थवादी अपेक्षाएँ उन्हें आत्मविश्वासी बना सकती हैं। स्वस्थ और आशावान युवा ही समाज के विकास में अपनी पूरी क्षमता लगा सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबन्ध में "युवाओं में बढ़ता तनाव" विषय का परिचय, मुख्य पक्ष और समाधान क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले भूमिका, तीन मुख्य बिंदु और निष्कर्ष की रूपरेखा बनाएँ; हर अनुच्छेद को विषय से जोड़कर रखें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

महँगाई की मार [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबन्ध में महँगाई का अर्थ, जनजीवन पर उसका प्रभाव और सुधार के उपाय स्पष्ट करने चाहिए।
- प्रस्तावना से विषय का परिचय दें, मुख्य भाग में विचारों को उदाहरण सहित विकसित करें और अंत में सार्थक निष्कर्ष रखें।

चरण 1: प्रारूप और विचार-योजना शीर्षक "महँगाई की मार" रखें। घरेलू बजट के उदाहरण से समस्या समझाएँ और उत्पादन, वितरण तथा उपभोक्ता सावधानी तक समाधान बढ़ाएँ। भाषा सरल, औपचारिक और अनुच्छेदों का क्रम तार्किक रखें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है; अतः विषय का पर्याप्त और संतुलित विकास करें।

चरण 2: पूरा नमूना निबन्ध महँगाई की मार

जब आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य लगातार बढ़ते हैं, तो आम आदमी की क्रयशक्ति घटती है। इसी स्थिति को महँगाई कहते हैं। आय की तुलना में खर्च बढ़ने पर परिवार का बजट बिगड़ जाता है। भोजन, शिक्षा, चिकित्सा और आवागमन जैसी आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन होने लगता है।

महँगाई की सबसे अधिक मार गरीबों और निश्चित आय वाले परिवारों पर पड़ती है। दाल, तेल, सब्जी और अनाज के दाम बढ़ें तो उन्हें अपने भोजन में कटौती करनी पड़ सकती है। बच्चों की पढ़ाई और बीमारी के उपचार के लिए बचाई गई रकम भी रोजमर्रा के खर्च में लग जाती है। छोटी बचत घटने से भविष्य की सुरक्षा कमजोर होती है। इस प्रकार महँगाई केवल आर्थिक समस्या नहीं, सामाजिक चिंता भी है।

इसके कई कारण हो सकते हैं। माँग की तुलना में उत्पादन कम होना, परिवहन तथा ऊर्जा की लागत बढ़ना और वितरण में बाधा आना कीमतों को प्रभावित करते हैं। जमाखोरी और मुनाफाखोरी भी उपभोक्ताओं की कठिनाई बढ़ाती हैं। इसलिए इस समस्या का समाधान केवल जनता से कम खर्च करने को कह देने में नहीं है।

सरकार को आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। उत्पादन बढ़ाने, भंडारण सुधारने और वितरण व्यवस्था मजबूत करने पर ध्यान देना आवश्यक है। जमाखोरी पर नियंत्रण तथा जरूरतमंदों तक सहायता पहुँचाना भी उपयोगी उपाय हैं। उपभोक्ता अपनी ओर से बजट बनाकर, आवश्यक खरीद को प्राथमिकता देकर और वस्तुओं की बर्बादी रोककर आर्थिक दबाव कुछ कम कर सकते हैं।

महँगाई पर नियंत्रण के लिए शासन, उत्पादकों, व्यापारियों और उपभोक्ताओं की साझा जिम्मेदारी है। लक्ष्य ऐसा संतुलित आर्थिक वातावरण होना चाहिए जिसमें सामान्य परिवार सम्मानपूर्वक अपनी मूल आवश्यकताएँ पूरी कर सके और भविष्य के लिए कुछ बचत भी कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबन्ध में "महँगाई की मार" विषय का परिचय, मुख्य पक्ष और समाधान क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले भूमिका, तीन मुख्य बिंदु और निष्कर्ष की रूपरेखा बनाएँ; हर अनुच्छेद को विषय से जोड़कर रखें।

---

4. राजमार्गों पर पथकर की ऊँची दरें होते हुए भी उनका रखरखाव असंतोषजनक है । राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अध्यक्ष को एक शिकायती पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में समस्या का स्पष्ट विवरण, उससे होने वाली कठिनाइयाँ और अपेक्षित कार्रवाई दी जाती है। भाषा शिष्ट, तथ्यपरक और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और हस्ताक्षर आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना पत्र राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अध्यक्ष को संबोधित होगा। विषय में ऊँचे पथकर के बावजूद

खराब रखरखाव का उल्लेख करें। मुख्य कथ्य में सड़क के गड्ढे, जलनिकासी, संकेतकों तथा प्रकाश की समस्याएँ बताकर यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा से उनका संबंध स्पष्ट करें। अंत में निरीक्षण, मरम्मत तथा शिकायतों के समयबद्ध निस्तारण का अनुरोध रखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2014
सेवा में,
अध्यक्ष महोदय,
राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण,
नई दिल्ली।
विषय: ऊँचे पथकर के बावजूद राजमार्गों के असंतोषजनक रखरखाव के संबंध में।
महोदय,
मैं आपके ध्यान में राष्ट्रीय राजमार्गों के खराब रखरखाव की समस्या लाना चाहता हूँ। इन मार्गों पर यात्रियों से ऊँची दरों पर पथकर वसूला जाता है, इसलिए उनसे सुरक्षित और सुगम यात्रा की अपेक्षा स्वाभाविक है। किंतु अनेक स्थानों पर गड्ढे, टूटी सड़क और उखड़ी सतह वाहन चालकों के लिए गंभीर कठिनाई उत्पन्न करते हैं। वर्षा होने पर जलभराव से समस्या और बढ़ जाती है।
कई स्थानों पर दिशा-संकेत अस्पष्ट हैं तथा रात्रिकालीन प्रकाश की व्यवस्था अपर्याप्त है। इससे दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ती है। वाहनों की टूट-फूट, ईंधन की बर्बादी और अनावश्यक विलंब का भार भी यात्रियों को उठाना पड़ता है। नियमित पथकर देने के बाद ऐसी असुविधाएँ चिंताजनक हैं।
आपसे अनुरोध है कि संबंधित मार्गों का तत्काल निरीक्षण कराकर गड्ढों की मरम्मत, जलनिकासी, स्पष्ट संकेतकों और समुचित प्रकाश की व्यवस्था कराएँ। रखरखाव के लिए जिम्मेदार संस्थाओं की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए तथा शिकायतों के निस्तारण हेतु समयसीमा निर्धारित हो। आशा है, यात्री-सुरक्षा को प्राथमिकता देकर शीघ्र कार्रवाई की जाएगी।
धन्यवाद।
भवदीय,
अजय कुमार

चरण 3: निष्कर्ष यह पत्र ऊँचे पथकर और असंतोषजनक सुविधाओं के संबंध को स्पष्ट करते हुए प्राधिकरण से निरीक्षण, मरम्मत और जवाबदेही सुनिश्चित करने का विनम्र अनुरोध करता है।

त्वरित सुझाव: शिकायत के साथ उसका प्रभाव और स्पष्ट समाधान लिखें; केवल नाराजगी व्यक्त करने के बजाय संबंधित अधिकारी से ठोस कार्रवाई माँगें।

अथवा

4. समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए और समाधान का एक सुझाव भी दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र किसी सार्वजनिक समस्या पर जनमत जागृत करता है। इसमें समस्या, उसका सामाजिक प्रभाव और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
- औपचारिक पत्र की भाषा संवेदनशील और संयत होनी चाहिए। किसी अप्रमाणित घटना या आँकड़े के बजाय विषय के स्पष्ट पक्षों पर बात करें।

चरण 1: प्रारूप और कथ्य की योजना पहले प्रेषक का पता और दिनांक दें, फिर संपादक का पद, समाचार पत्र का नाम तथा पता लिखें। विषय में महिलाओं पर अत्याचार का उल्लेख करें। मुख्य भाग में हिंसा, उत्पीड़न और असुरक्षा की समस्या तथा समानता पर उसके प्रभाव

को समझाएँ। समाधान के लिए स्थानीय स्तर पर प्रभावी महिला सहायता केंद्र स्थापित करने का एक स्पष्ट सुझाव दें और समाचार पत्र से जनजागरण का आग्रह करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 18, शांति विहार
नई दिल्ली
15 मार्च, 2014
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।
विषय: महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों की ओर ध्यान आकर्षित करने के संबंध में।
महोदय,
आपके लोकप्रिय दैनिक के माध्यम से मैं समाज और प्रशासन का ध्यान महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। घरेलू हिंसा, दहेज के लिए उत्पीड़न, कार्यस्थल पर दुर्व्यवहार और सार्वजनिक स्थानों पर छेड़छाड़ जैसी घटनाएँ महिलाओं की गरिमा और स्वतंत्रता पर आघात करती हैं। इनसे अनेक महिलाएँ भय में जीती हैं और शिक्षा, रोजगार तथा सार्वजनिक जीवन में समान भागीदारी से वंचित रह जाती हैं।
चिंता की बात यह है कि सामाजिक बदनामी का डर और शिकायत पर सहयोग न मिलने की आशंका कई पीड़िताओं को चुप रहने पर मजबूर करती है। पीड़िता को दोष देने की प्रवृत्ति अन्याय को बढ़ाती है। परिवार तथा समाज को उसके साथ सम्मान और विश्वास का व्यवहार करना चाहिए।
मेरा सुझाव है कि प्रत्येक क्षेत्र में सुलभ महिला सहायता केंद्र स्थापित किए जाएँ। वहाँ प्रशिक्षित कर्मी शिकायत की गोपनीयता बनाए रखते हुए कानूनी सहायता, परामर्श और पुलिस से संपर्क की सुविधा दें। इससे पीड़िताएँ निडर होकर सहायता माँग सकेंगी और शिकायत पर शीघ्र कार्रवाई संभव होगी।
कृपया इस विषय को अपने समाचार पत्र में प्रमुखता देकर समानता, सम्मान और संवेदनशीलता के प्रति जनजागरण करें।
धन्यवाद।
भवदीया,
रचना शर्मा

चरण 3: निष्कर्ष पत्र महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा के प्रश्न को सार्वजनिक चिंता के रूप में उठाता है तथा सुलभ महिला सहायता केंद्रों का व्यावहारिक सुझाव देकर संपादक से जनजागरण का आग्रह करता है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में समस्या के बाद स्पष्ट सुझाव अवश्य दें और अंत में समाचार पत्र से उस मुद्दे को उठाने का अनुरोध जोड़ें।

5(क). 'धर्म को व्यावसायिकता से जोड़ते संत' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी विषय का रोचक, संवेदनशील और विचारपूर्ण प्रस्तुतीकरण है। आकर्षक शीर्षक, प्रभावशाली आरंभ, मानवीय पक्ष और सार्थक समापन इसके प्रमुख अंग हैं।
- विषय धार्मिक आस्था की आलोचना नहीं, बल्कि कुछ संतों द्वारा उसे लाभ और प्रचार का साधन बनाने की प्रवृत्ति की पड़ताल चाहता है। संतुलित भाषा में इस अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: फीचर का प्रारूप और सामग्री पहले जिज्ञासा जगाने वाला शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। आरंभ में धार्मिक आयोजन का सामान्य दृश्य लेकर पाठक को विषय से जोड़ें। मध्य में आस्था के बाजारीकरण के रूप, साधारण श्रद्धालु पर उनका प्रभाव तथा वास्तविक संत-परंपरा से उनका अंतर समझाएँ। अंत में विवेकपूर्ण आस्था और पारदर्शिता की आवश्यकता रेखांकित करें। किसी वास्तविक व्यक्ति

पर अप्रमाणित आरोप या काल्पनिक आँकड़े न दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फीचर आस्था के मंच पर बाजार की दस्तक

लेखक: अभय कुमार

भव्य पंडाल, चमकते विज्ञापन और मंच पर संत का बड़ा चित्र! कहीं प्रवचन के साथ विशेष उत्पादों का प्रचार है, तो कहीं अधिक दान देने वालों के लिए अलग बैठक। ऐसे दृश्य मन में प्रश्न जगाते हैं कि त्याग और सेवा का संदेश देने वाला धर्म कहीं व्यवसाय की भाषा तो नहीं बोलने लगा है।

भारतीय संत-परंपरा ने मनुष्य को लोभ से मुक्ति, करुणा और आत्मसंयम की राह दिखाई है। किंतु कुछ लोग इसी परंपरा की प्रतिष्ठा को निजी लाभ का साधन बना लेते हैं। श्रद्धालुओं के विश्वास और भय का उपयोग करके महँगे अनुष्ठानों, चमत्कारी वस्तुओं तथा विशेष दर्शनों को मुक्ति का उपाय बताया जाता है। जब आध्यात्मिक अनुभव की जगह भुगतान महत्त्वपूर्ण हो जाए, तब साधारण श्रद्धालु ग्राहक बनकर रह जाता है।

इस प्रवृत्ति का सबसे संवेदनशील पक्ष आस्थावान व्यक्ति की विवशता है। दुख या संकट में घिरा मनुष्य आश्वासन खोजता है। उसे विवेक, सहारे और मानवीय संवेदना की आवश्यकता होती है, चमत्कार की कीमत चुकाने के दबाव की नहीं। दूसरी ओर अनेक संत और संस्थाएँ निस्वार्थ सेवा भी करती हैं; इसलिए सभी को एक ही दृष्टि से देखना उचित नहीं।

धार्मिक संस्थाओं के आय-व्यय में पारदर्शिता और श्रद्धालुओं में विवेक इस स्थिति को बदल सकते हैं। सेवा के लिए स्वैच्छिक सहयोग और लाभ के लिए आस्था का दोहन अलग बातें हैं। धर्म की सार्थकता धन और वैभव के प्रदर्शन में नहीं, मनुष्य के दुख को कम करने में है। आस्था का दीप तभी उजला रहेगा, जब उसे लोभ के धुएँ से बचाया जाए।

चरण 3: निष्कर्ष फीचर रोचक दृश्य से आरंभ होकर धर्म के व्यावसायीकरण के रूप और मानवीय प्रभाव स्पष्ट करता है। उसका समापन विवेक, सेवा और आर्थिक पारदर्शिता को महत्व देता है।

त्वरित सुझाव: फीचर को सूखे निबंध से अलग बनाने के लिए दृश्यात्मक आरंभ रखें और अंतिम पंक्ति को आरंभ के केंद्रीय प्रश्न से जोड़ें।

अथवा

5(क). 'मिटते रीति-रिवाज' विषय पर फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय का रोचक, संवेदनशील और तथ्यपूर्ण प्रस्तुतीकरण है। इसमें मानवीय अनुभवों के माध्यम से विषय के विविध पक्ष सामने आते हैं।
- प्रभावी शीर्षक, आकर्षक आरंभ, उदाहरणों से युक्त विस्तार और विचारोत्तेजक समापन फ़ीचर की रचना को पूर्ण बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना विषय के अनुरूप शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। आरंभ में किसी परिचित दृश्य से पाठक को जोड़ें। फिर रीति-रिवाजों के मिटने के कारण, उनके सामाजिक महत्त्व तथा उपयोगी परंपराओं के संरक्षण पर विचार करें। रूढ़ियों और मानवीय मूल्यों में अंतर स्पष्ट रखें।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर **मिटते रीति-रिवाज : आँगन से ओझल होती रौनक**

लेखक : अजय कुमार

कभी विवाह का निमंत्रण देने घर का बड़ा स्वयं पहुँचता था। आँगन में बैठी महिलाएँ लोकगीत गातीं और पड़ोसी बिना बुलाए काम सँभाल लेते थे। आज मोबाइल पर भेजा गया संदेश निमंत्रण का स्थान ले रहा है। समारोह अधिक भव्य हुए हैं, पर उनमें अपनापन कभी-कभी कम दिखाई देता है।

रीति-रिवाज केवल रस्में नहीं होते। वे पीढ़ियों के अनुभव, स्थानीय कला और सामूहिक जीवन की स्मृतियाँ भी सँजोते हैं। त्योहारों पर मिलकर पकवान बनाना, बड़ों से आशीर्वाद लेना और सुख-दुख में साथ खड़ा होना रिश्तों को मजबूत करता है। जब ये अवसर घटते हैं, तो बच्चों का अपनी बोली, लोकगीतों और पारिवारिक इतिहास से परिचय भी कम होने लगता है।

बदलती जीवनशैली ने इस परिवर्तन को तेज किया है। काम के लिए पलायन, छोटे परिवार, समय का अभाव और बाज़ार की बढ़ती भूमिका ने कई परंपराओं को संक्षिप्त कर दिया है। तैयार सजावट और खरीदे हुए उपहार सुविधाजनक हैं, लेकिन सामूहिक तैयारी का आनंद उनसे हमेशा नहीं मिलता।

फिर भी हर पुरानी प्रथा को बचाना आवश्यक नहीं। दहेज, भेदभाव और अपव्यय जैसी रूढ़ियों को छोड़ना ही समाज की प्रगति है। बचाने योग्य हैं सहयोग, सादगी, आत्मीयता और प्रकृति के प्रति सम्मान। परिवार बच्चों को त्योहारों की कहानियाँ सुनाएँ, स्थानीय गीत सिखाएँ और सामूहिक उत्सवों में उनकी भागीदारी बढ़ाएँ।

परंपरा तभी जीवित रहती है जब नई पीढ़ी उसे अपना अनुभव बनाए। बदलते समय के साथ रीति-रिवाजों का रूप बदले, पर उनमें बसी मनुष्यता की लौ बुझने न पाए।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर मिटते रीति-रिवाजों के कारण और प्रभाव सामने रखता है तथा उपयोगी परंपराओं को नए समय के अनुरूप बचाने का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में केवल उपदेश न दें; किसी जीवंत दृश्य से शुरुआत कर उसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को समझाएँ।

5(ख)(i). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

हिन्दी के पहले साप्ताहिक पत्र का नाम बताइए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में प्रथम समाचारपत्र का नाम पहचानना इस प्रश्न का मुख्य उद्देश्य है।
- साप्ताहिक पत्र सप्ताह में एक बार प्रकाशित होता है; यहाँ हिंदी के पहले ऐसे पत्र का नाम पूछा गया है।

चरण 1: पत्र की पहचान हिंदी का पहला साप्ताहिक समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था। इसके संपादक पंडित जुगल किशोर शुक्ल थे।

चरण 2: ऐतिहासिक संदर्भ इसका प्रकाशन 30 मई 1826 को कलकत्ता से आरंभ हुआ था। प्रश्न केवल पत्र का नाम पूछता है, इसलिए संक्षिप्त उत्तर में 'उदन्त मार्तण्ड' लिखना पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी के पहले साप्ताहिक पत्र का नाम 'उदन्त मार्तण्ड' है।

त्वरित सुझाव: प्रथम हिंदी साप्ताहिक के लिए 'उदन्त मार्तण्ड' याद रखें; इसे किसी बाद के प्रसिद्ध हिंदी पत्र से न मिलाएँ।

5(ख)(ii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

फीड बैक से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संचार में प्रेषक संदेश भेजता है और प्राप्तकर्ता उसे ग्रहण कर उसका अर्थ समझता है।
- प्राप्तकर्ता की ओर से संदेश पर व्यक्त प्रतिक्रिया को फीडबैक या प्रतिपुष्टि कहते हैं।

चरण 1: अर्थ स्पष्ट करें फीडबैक संदेश प्राप्त करने वाले की वह प्रतिक्रिया है जो संदेश भेजने वाले तक वापस पहुँचती है। इससे पता चलता है कि संदेश समझा गया या नहीं तथा उसका क्या प्रभाव पड़ा।

चरण 2: भूमिका समझें उदाहरण के लिए शिक्षक की बात सुनकर विद्यार्थी का प्रश्न पूछना प्रतिपुष्टि है। यह संचार को दोतरफा बनाती है और प्रेषक को अपनी बात स्पष्ट करने या सुधारने का अवसर देती है।

चरण 3: निष्कर्ष फीडबैक से आशय संदेश के संबंध में प्राप्तकर्ता द्वारा प्रेषक को दी गई प्रतिक्रिया या प्रतिपुष्टि से है।

त्वरित सुझाव: फीडबैक की परिभाषा में प्रतिक्रिया देने वाला प्राप्तकर्ता और प्रतिक्रिया पाने वाला प्रेषक अवश्य स्पष्ट करें।

5(ख)(iii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

उल्टा पिरामिड शैली क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली में सूचनाएँ महत्त्व के घटते क्रम में प्रस्तुत होती हैं।
- इस शैली का आधार घटना का कालक्रम नहीं, बल्कि पाठक के लिए सूचना का महत्त्व है।

चरण 1: आरंभ की भूमिका समाचार के आरंभिक अनुच्छेद या आमुख में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए जाते हैं। इससे पाठक तुरंत घटना की मुख्य सूचना समझ लेता है और समाचार का सार जान जाता है।

चरण 2: आगे का क्रम इसके बाद महत्त्वपूर्ण विवरण और अंत में अपेक्षाकृत कम आवश्यक तथ्य या पृष्ठभूमि आती है। इस व्यवस्था से नीचे का अंश छोटा करने पर भी मुख्य सूचना सुरक्षित रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष उल्टा पिरामिड शैली वह समाचार लेखन शैली है जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले और कम महत्त्वपूर्ण तथ्य बाद में लिखे जाते हैं।

त्वरित सुझाव: क्रम याद रखें: मुख्य सूचना, उसका विस्तार, फिर कम आवश्यक विवरण; केवल घटना का समयक्रम लिखना पर्याप्त नहीं।

5(ख)(iv). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'बीट' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में समाचार-संग्रह का काम विभिन्न क्षेत्रों या विषयों के आधार पर बाँटा जाता है।
- संवाददाता को नियमित समाचार-संग्रह के लिए सौंपा गया निश्चित क्षेत्र या विषय उसकी बीट कहलाता है।

चरण 1: बीट का अर्थ समाचार संस्था जिस निश्चित विषय या क्षेत्र की खबरें जुटाने का दायित्व किसी संवाददाता को देती है, उसे उस संवाददाता की बीट कहते हैं। यह उसके नियमित कार्य का निर्धारित दायरा होता है।

चरण 2: उदाहरण से स्पष्ट करें अपराध, शिक्षा, खेल और राजनीति अलग-अलग बीट हो सकती हैं। शिक्षा बीट का संवाददाता विद्यालयों, परीक्षाओं और शिक्षा विभाग से जुड़ी घटनाओं की खबरें नियमित रूप से एकत्र करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट पत्रकार को नियमित समाचार-संग्रह और रिपोर्टिंग के लिए सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र है।

त्वरित सुझाव: बीट बताते समय केवल 'खबर' न लिखें; निश्चित क्षेत्र और नियमित रिपोर्टिंग का दायित्व जोड़ें।

5(ख)(v). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्वतन्त्र पत्रकार का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों के कार्य-संबंध और नियुक्ति के आधार पर उनके प्रकार पहचाने जाते हैं।
- स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचार संस्था का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी हुए बिना पत्रकारिता करता है।

चरण 1: नियुक्ति की स्थिति स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचारपत्र, पत्रिका या अन्य मीडिया संस्था में स्थायी रूप से नियुक्त नहीं होता। वह अपनी स्वतंत्र कार्य-व्यवस्था के अंतर्गत समाचार, लेख या रिपोर्ट तैयार करता है।

चरण 2: कार्य की प्रकृति वह अलग-अलग संस्थाओं को अपनी सामग्री उपलब्ध करा सकता है और सामान्यतः प्रकाशित या स्वीकृत सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक पाता है। स्वतंत्र का अर्थ पत्रकारिता के उत्तरदायित्वों से मुक्त होना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वतंत्र पत्रकार वह है जो किसी एक मीडिया संस्था का नियमित कर्मचारी हुए बिना विभिन्न संस्थाओं के लिए स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता करता है।

त्वरित सुझाव: स्वतंत्र पत्रकार की पहचान स्थायी नियुक्ति के अभाव और अलग-अलग संस्थाओं के लिए सामग्री तैयार करने से करें।

6. 'भारत का मंगल अभियान' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी विषय का तथ्यपूर्ण, क्रमबद्ध और विचारप्रधान विवेचन होता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, लेखक का नाम, विषय का परिचय, विवेचन और सार्थक समापन रखा जाता है।
- भारत के मंगल अभियान का विवेचन वैज्ञानिक उद्देश्य, स्वदेशी तकनीक और राष्ट्रीय महत्त्व के आधार पर किया जाएगा। प्रश्न के समय के अनुसार अभियान को मंगल की ओर अग्रसर बताया जाएगा।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक के बाद लेखक का नाम लिखें। भूमिका में भारत की अंतरिक्ष यात्रा की प्रगति बताएँ। मुख्य भाग में प्रक्षेपण, वैज्ञानिक उद्देश्य और तकनीकी चुनौतियों की चर्चा करें। समापन में शोध, वैज्ञानिक दृष्टि तथा युवा पीढ़ी को मिलने वाली प्रेरणा पर विचार रखें। तथ्य और विचार परस्पर जुड़े रहें; आलेख केवल घटनाओं की सूची न बने।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख भारत का मंगल अभियान

लेखक : अजय कुमार

भारत का मंगल अभियान हमारी वैज्ञानिक क्षमता और दूरदर्शिता का महत्त्वपूर्ण परिचायक है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने 5 नवंबर 2013 को श्रीहरिकोटा से मंगलयान का प्रक्षेपण किया। पृथ्वी की कक्षा में आवश्यक प्रक्रियाएँ पूरी करने के बाद यह यान मंगल की ओर बढ़ रहा है। इस अभियान ने देश में अंतरिक्ष अनुसंधान के प्रति नई उत्सुकता जगाई है।

अभियान का एक प्रमुख उद्देश्य दूरस्थ ग्रह तक अंतरिक्षयान भेजने और उसका संचालन करने की तकनीक विकसित करना है। मंगल की सतह तथा वायुमंडल का अध्ययन भी इसके वैज्ञानिक लक्ष्यों में शामिल है। इतनी लंबी यात्रा में दिशा, गति, संचार और ऊर्जा का सही प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। यान तक संकेत पहुँचने में लगने वाला समय भी वैज्ञानिकों के सामने चुनौती प्रस्तुत करता है।

सीमित संसाधनों में इस जटिल परियोजना को आगे बढ़ाना भारतीय वैज्ञानिकों की दक्षता का प्रमाण है। अंतरिक्ष अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान और तकनीकी अनुभव भविष्य के अभियानों को दिशा देंगे। ऐसी उपलब्धियाँ विद्यार्थियों में जिज्ञासा जगाती हैं तथा उन्हें विज्ञान की ओर आकर्षित करती हैं।

हमें इस अभियान को केवल राष्ट्रीय प्रतिष्ठा से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। इसका व्यापक अर्थ ज्ञान की खोज, नई तकनीक का विकास और वैज्ञानिक सोच का विस्तार है। मंगलयान भारत की उस आकांक्षा का प्रतीक है जो कठिन चुनौतियों को स्वीकार करके मानव ज्ञान में अपना योगदान देना चाहती है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख में मंगल अभियान के वैज्ञानिक उद्देश्य, तकनीकी चुनौतियाँ और राष्ट्रीय महत्त्व का क्रमबद्ध विवेचन किया गया है।

त्वरित सुझाव: आलेख को भाषण न बनाएँ; संबोधन के स्थान पर शीर्षक दें और वैज्ञानिक तथ्यों को विचारों से जोड़ें।

अथवा

6. 'इण्टरनेट पर समाचार' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय के विभिन्न पक्षों का तार्किक विवेचन किया जाता है। शीर्षक और लेखक के नाम के बाद परिचय, विस्तार तथा निष्कर्ष रखा जाता है।
- इस विषय में इंटरनेट पर समाचार की उपलब्धता, तात्कालिकता, बहुमाध्यमी प्रस्तुति और पाठकीय सहभागिता के साथ विश्वसनीयता की चुनौती का संतुलित विवेचन अपेक्षित है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना भूमिका में समाचार पाने की बदलती आदत बताएँ। मुख्य भाग में गति, व्यापक पहुँच, संग्रह और सहभागिता के लाभ समझाएँ। फिर अपुष्ट सूचनाओं, अफवाहों और सनसनी की समस्या रखें। समापन में उत्तरदायी पत्रकारिता तथा सजग पाठक की भूमिका स्पष्ट करें। भाषा सहज और विवेचनात्मक रखें; केवल इंटरनेट की सामान्य उपयोगिता न गिनाएँ।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख इंटरनेट पर समाचार

लेखिका : नेहा शर्मा

इंटरनेट ने समाचारों की दुनिया को नई गति दी है। अब पाठक किसी घटना की जानकारी के लिए अगले दिन के समाचारपत्र की प्रतीक्षा करने को बाध्य नहीं है। समाचार वेबसाइटों पर देश और दुनिया की घटनाओं का विवरण शीघ्र उपलब्ध हो जाता है। कंप्यूटर या मोबाइल के माध्यम से पाठक अपनी सुविधा के अनुसार समाचार पढ़ सकता है।

इंटरनेट पर समाचार केवल लिखित शब्दों तक सीमित नहीं रहते। चित्र, ध्वनि और वीडियो किसी घटना को समझने में सहायता करते हैं। पुराने समाचार खोजना, संबंधित विवरण पढ़ना और अलग-अलग स्रोतों की तुलना करना भी संभव है। पाठक अपनी प्रतिक्रिया देकर चर्चा में भाग ले सकता है। इस प्रकार समाचार का संचार अधिक सहभागी बनता है।

किंतु सूचना की तीव्रता के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। पहले समाचार देने की होड़ में अधूरी या अपुष्ट जानकारी प्रकाशित हो सकती है। भ्रामक शीर्षक, अफवाहें और सनसनी पाठक को भ्रमित कर सकते हैं। हर लोकप्रिय सूचना को सत्य मान लेना उचित नहीं है। समाचार पढ़ते समय उसके स्रोत, प्रकाशन की तारीख और प्रमाणों की जाँच आवश्यक है।

इंटरनेट ने पत्रकारिता को व्यापक अवसर दिए हैं, लेकिन उसकी उपयोगिता विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। समाचार संस्थानों को तथ्य जाँचने और त्रुटि सुधारने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। पाठकों को भी बिना पुष्टि के संदेश आगे नहीं भेजने चाहिए। तकनीक और विवेक का साथ ही इंटरनेट को स्वस्थ, उपयोगी तथा लोकतांत्रिक समाचार माध्यम बना सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पर समाचार का विवेचन उसकी गति और सहभागिता के लाभों के साथ तथ्य-जाँच तथा संपादकीय उत्तरदायित्व की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: मुख्य विषय समाचार है; इंटरनेट के अन्य उपयोगों में न भटकें और लाभों के साथ विश्वसनीयता पर भी लिखें।

7. मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !
प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

7(क). जगजीवन का भार लिए फिरने से कवि का क्या आशय है ? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन के पद्यांश में सांसारिक संघर्ष और निजी प्रेमानुभूति साथ-साथ उपस्थित हैं। कवि कठिनाइयों के बीच भी स्नेह बनाए रखता है।
- पद्यांश की पहली दो पंक्तियों को जोड़कर पढ़ने से प्रश्न के दोनों पक्ष स्पष्ट होते हैं : जीवन का भार और उसके बावजूद हृदय में प्यार।

चरण 1: जगजीवन के भार का आशय जगजीवन का भार लिए फिरने से कवि का आशय सांसारिक जीवन के दायित्वों, चिंताओं और संघर्षों को वहन करने से है। वह जीवन की कठिनाइयों से अलग नहीं है, बल्कि उनका अनुभव करते हुए जीता है। यहाँ भार का अर्थ किसी भौतिक वस्तु का बोझ नहीं, जीवन के तनाव और उत्तरदायित्व हैं।

चरण 2: कठिनाइयों के बीच प्रेम बनाए रखना इन परिस्थितियों में भी कवि अपने जीवन में प्यार लिए फिरता है। उसके हृदय में प्रेम, आत्मीयता और जीवन के प्रति अनुराग बना रहता है। पहली पंक्ति का भार दूसरी पंक्ति के प्यार को नष्ट नहीं कर पाता। इसीलिए कवि का व्यक्तित्व संघर्ष सहने के साथ प्रेमपूर्ण बने रहने का संदेश देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सांसारिक चिंताओं और दायित्वों का भार वहन करता है; फिर भी अपने हृदय में प्रेम और आत्मीयता संजोए रखता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भार का अर्थ समझाने के बाद भी प्यार बनाए रखने का दूसरा पक्ष अवश्य लिखें।

7(ख). 'स्नेह-सुरा' से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्नेह-सुरा में प्रेम को मदिरा के रूप में व्यक्त किया गया है। यह प्रेम से प्राप्त मस्ती और आत्मविभोरता का बिंब है।
- अर्थ समझाते समय पद्यांश के प्रसंग को देखें : कवि स्नेह में डूबा है और अपने मन का गान करता है। यहाँ मदिरा का वास्तविक सेवन अभिप्रेत नहीं है।

चरण 1: स्नेह और सुरा का संबंध स्नेह का अर्थ प्रेम और आत्मीयता है तथा सुरा का सामान्य अर्थ मदिरा है। दोनों के संयोग से कवि प्रेम की ऐसी गहरी अनुभूति व्यक्त करता है जो उसे आनंद और मस्ती से भर देती है। जिस प्रकार मदिरा का नशा व्यक्ति को अपने प्रभाव में ले लेता है, उसी प्रकार कवि का मन प्रेम के रस में डूबा हुआ है।

चरण 2: पद्यांश के प्रसंग में भाव स्नेह-सुरा का पान करने का आशय प्रेम में मग्न होकर जीवन जीना है। इस आत्मविभोर अवस्था में कवि संसार की प्रशंसा या आलोचना की चिंता करने के बजाय अपने मन की अनुभूति गाता है। यह प्रेम की तन्मयता और आंतरिक आनंद की अभिव्यक्ति है; इसे वास्तविक मद्यपान का कथन समझना पद्यांश के भाव से असंगत होगा।

चरण 3: निष्कर्ष स्नेह-सुरा से आशय प्रेम की मदिरा अर्थात् प्रेम का वह गहरा आनंद और मस्ती है जिसमें कवि का मन डूबा रहता है।

त्वरित सुझाव: स्नेह-सुरा का केवल शब्दार्थ न दें; प्रेम से उत्पन्न मस्ती और तन्मयता भी स्पष्ट करें।

7(ग). आशय स्पष्ट कीजिए –

जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने संसार की रुचि और अपनी निजी काव्यप्रवृत्ति का अंतर प्रस्तुत किया है। संसार अपनी पसंद के अनुरूप बोलने वालों को महत्त्व देता है।
- पंक्ति का अर्थ अगली पंक्ति से और स्पष्ट होता है : कवि जग की गाने के स्थान पर अपने मन का गान करता है।

चरण 1: जग की गाने वालों का अर्थ जग की गाने वाले वे लोग हैं जो संसार की रुचियों, अपेक्षाओं और प्रचलित धारणाओं के अनुरूप अपनी बात कहते हैं। उनकी वाणी में वही सुनाई देता है जिसे समाज सुनना चाहता है। इसलिए संसार उन्हें पूछता है, अर्थात् उन्हें मान्यता, सम्मान और लोकप्रियता देता है। यहाँ पूछने का आशय केवल प्रश्न पूछना नहीं, महत्त्व देना है।

चरण 2: कवि की स्वतंत्र अनुभूति से संबंध इस कथन के माध्यम से कवि अपनी अलग स्थिति सामने रखता है। वह लोकप्रशंसा पाने के लिए अपनी अनुभूति नहीं बदलता, बल्कि अपने मन का गान करता है। संसार की रुचि का अनुसरण करने वालों को मिलने वाला महत्त्व उसे अपने अंतर्मन से विचलित नहीं करता। इस प्रकार पंक्ति सामाजिक मान्यता की प्रवृत्ति तथा कवि की भावनात्मक स्वतंत्रता, दोनों को उजागर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष संसार उन्हीं लोगों को महत्त्व देता है जो उसकी रुचि और अपेक्षाओं के अनुसार बोलते हैं; कवि ऐसी लोकप्रियता के बजाय अपने मन की सच्ची अनुभूतियाँ व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: पूछ रहा का अर्थ महत्त्व देना लिखें और जग की गाते को संसार की रुचि के अनुरूप बोलने से जोड़ें।

7(घ). 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य है ? आपके विचार से उन्हें किसने झंकृत किया होगा ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने जीवन और हृदय की संवेदनशीलता को वीणा के तारों के रूप में प्रस्तुत किया है।
- प्रेम का स्पर्श मनुष्य के भीतर भावनाओं और सृजन की चेतना जगाता है।

चरण 1: साँसों के तार का अर्थ 'साँसों के दो तार' से कवि का तात्पर्य उसके जीवन की साँसों और भावनाओं से है। जैसे वाद्य के तार छूने पर स्वर उत्पन्न करते हैं, वैसे ही उसका संवेदनशील हृदय प्रेम का अनुभव करके भावों से भर उठता है। यहाँ साँसें केवल जीवित रहने की क्रिया नहीं, प्रेम से स्पंदित जीवन का संकेत हैं।

चरण 2: झंकृत करने वाले का संकेत 'कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर' में किसी प्रिय व्यक्ति के स्नेहपूर्ण स्पर्श की ओर संकेत है। मेरे विचार से कवि की प्रेयसी अथवा किसी आत्मीय के प्रेम ने उसके जीवन में यह मधुर हलचल उत्पन्न की होगी। पद्यांश किसी व्यक्ति का नाम नहीं बताता; इसलिए प्रेम करने वाले आत्मीय का संकेत ही उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष साँसों के तार कवि के संवेदनशील, प्राणमय जीवन के प्रतीक हैं। किसी प्रिय के प्रेम ने उन्हें झंकृत करके जीवन को मधुरता और सृजन की प्रेरणा दी है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ बताते समय तार, झंकार और प्रेम के बीच संबंध स्पष्ट कीजिए।

अथवा

7. अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर ।
प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

7(क). कवि अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों मानता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अट्टालिकाएँ संपन्न वर्ग के वैभव और शक्ति की प्रतीक हैं।
- क्रांति का भय शोषण पर आधारित सुख और सत्ता को असुरक्षित करता है।

चरण 1: अट्टालिका का सामाजिक संकेत ऊँची अट्टालिकाएँ धनवान और शोषक वर्ग के ऐश्वर्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन भवनों में रहने वाले लोग अपने धन, संपत्ति और अधिकार को सुरक्षित रखना चाहते हैं। इनका वैभव समाज की विषमता से जुड़ा है; इसलिए ये सामान्य जन के सुख के केंद्र नहीं बन पाते।

चरण 2: आतंक-भवन कहने का कारण बादल की गर्जना और जल-विप्लव क्रांति तथा परिवर्तन का संकेत देते हैं। इस परिवर्तन से धनिकों को अपने संचित वैभव और प्रभुत्व के नष्ट होने का भय होता है। अत: जिन भवनों को बाहर से सुख और सुरक्षा का स्थान समझा जाता है, उनके भीतर भय व्याप्त है। इसी भय के कारण कवि उन्हें 'आतंक-भवन' कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषण पर टिकी संपत्ति और सत्ता खोने के भय से संपन्न वर्ग की अट्टालिकाएँ आतंक से भरी रहती हैं; इसलिए कवि उन्हें आतंक-भवन मानता है।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका का अर्थ लिखने के बाद क्रांति से उत्पन्न भय का कारण अवश्य जोड़िए।

7(ख). 'पंक' और 'जलज' का प्रतीकार्थ बताइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक किसी दृश्य वस्तु के माध्यम से व्यापक सामाजिक अर्थ व्यक्त करता है।
- कमल और कीचड़ का अंतर कविता में वर्ग-विषमता को प्रकट करता है।

चरण 1: पंक का प्रतीकार्थ 'पंक' का शाब्दिक अर्थ कीचड़ है। कविता में यह समाज के गरीब, उपेक्षित, दलित और शोषित वर्ग का प्रतीक है। जैसे कीचड़ नीचे रहता है और उपेक्षित समझा जाता है, वैसे ही यह वर्ग सामाजिक व्यवस्था में दबा रहता है। जल-विप्लव का उससे संबंध परिवर्तन में उसकी केंद्रीय भूमिका बताता है।

चरण 2: जलज का प्रतीकार्थ 'जलज' का शाब्दिक अर्थ जल में जन्मा कमल है। यहाँ वह संपन्न, सुविधाभोगी और पूँजीपति वर्ग का प्रतीक है। कमल का खिलना और उससे जल छलकना बाहरी समृद्धि तथा वैभव का बिंब बनता है। पंक और जलज को साथ रखकर कवि समाज के दबे हुए वर्ग तथा उसके ऊपर सुख भोगने वाले वर्ग का अंतर उभारता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक गरीब, शोषित और उपेक्षित जनसमुदाय का, जबकि जलज संपन्न तथा सुविधाभोगी वर्ग का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों शब्दों का सामान्य अर्थ बताइए, फिर उनका सामाजिक प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

7(ग). आशय स्पष्ट कीजिए -

सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जल-विप्लव-प्लावन क्रांति और व्यापक परिवर्तन का प्रतीक है।
- पंक का बिंब दबे हुए जनसमुदाय की परिवर्तनकारी भूमिका बताता है।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब का अर्थ पंक्ति में कवि कहता है कि जल का प्रबल प्रवाह और उथल-पुथल पंक के स्तर पर होती है। जल-विप्लव-प्लावन में साधारण वर्षा की अपेक्षा तेज बहाव, आंदोलन और पुरानी स्थिति को बदल देने की शक्ति का संकेत है। नीचे पड़े कीचड़ का बिंब इस परिवर्तन को समाज के निचले स्तर से जोड़ता है।

चरण 2: सामाजिक आशय इसका आशय है कि समाज की क्रांति का आधार गरीब, पीड़ित और शोषित जनता होती है। अन्याय का सबसे अधिक अनुभव यही लोग करते हैं; इसलिए परिवर्तन की आकांक्षा और संघर्ष भी इन्हीं के बीच जन्म लेते हैं। क्रांति संपन्न वर्ग के सुरक्षित वैभव से नहीं, उपेक्षित जनसमुदाय की पीड़ा और प्रतिरोध से शक्ति पाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का वास्तविक आधार शोषित, गरीब तथा उपेक्षित जनता होती है। पंक और जल-विप्लव इसी जनशक्ति का संकेत देते हैं।

त्वरित सुझाव: आशय में प्राकृतिक दृश्य दोहराने के साथ उसका सामाजिक अर्थ भी स्पष्ट कीजिए।

7(घ). शिशु का उल्लेख यहाँ क्यों किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिशु सहजता, निष्कपटता और जीवन के उल्लास का बिंब है।
- दुःख में भी बनी हुई हँसी अभावग्रस्त जीवन की जिजीविषा प्रकट करती है।

चरण 1: शिशु के चित्र का अर्थ कवि ने ऐसे शिशु का चित्र दिया है जिसका सुकुमार शरीर रोग और शोक से प्रभावित होने पर भी हँसता है। यह हँसी सहज है; उसमें धन-संपत्ति खोने का भय अथवा वैभव बचाने की चिंता नहीं है। शिशु का उल्लेख कठिन परिस्थिति में भी बने रहने वाले जीवन के आनंद को मूर्त रूप देता है।

चरण 2: कविता के सामाजिक संदर्भ से संबंध शिशु का बिंब अभावग्रस्त, सामान्य जन की निष्कपटता और जिजीविषा को उभारता है। संपन्न वर्ग आतंक से घिरा है, जबकि साधारण जीवन दुःख के बीच भी हँस सकता है। इस विरोध के माध्यम से कवि बताता है कि सच्ची जीवनशक्ति और सहज प्रसन्नता केवल धन तथा ऐश्वर्य पर निर्भर नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष शिशु का उल्लेख रोग-शोक और अभाव के बीच भी बनी रहने वाली सहज प्रसन्नता, निष्कपटता तथा जीवनशक्ति को दिखाने के लिए किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिशु की हँसी को रोग-शोक और आतंक-भवन के विरोध में रखकर समझाइए।

---

8. सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ।।
अस विचारि जियँ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।।
नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). काव्यांश में प्रयुक्त भाषा एवं छन्द का नाम लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की पहचान उसके शब्दरूपों और व्याकरणिक प्रयोगों से की जाती है।
- चौपाई एक मात्रिक छंद है जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

चरण 1: प्रयुक्त भाषा की पहचान काव्यांश की भाषा अवधी है। 'सुत', 'बित', 'नारि', 'होहिं', 'जाहिं', 'मिलइ' तथा 'जगत' जैसे शब्द और क्रियारूप अवधी की विशेषता प्रकट करते हैं। तुलसीदास ने राम के हृदय की करुणा को सरल और भावपूर्ण लोकभाषा में व्यक्त किया है। भाषा का नाम बताते समय इन प्रयोगों को आधार बनाया जा सकता है।

चरण 2: प्रयुक्त छंद की पहचान इस काव्यांश में चौपाई छंद प्रयुक्त हुआ है। चौपाई मात्रिक छंद है और उसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ रहती हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में चरणों के अंत में ठहराव तथा समान लय मिलती है। 'सुत बित नारि भवन परिवारा' और 'होहिं जाहिं जग बारहिं बारा' इसके क्रमिक चरण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा अवधी और छंद चौपाई है। अवधी के विशिष्ट शब्दरूप तथा चौपाई की नियमित मात्रिक लय इसके प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: अवधी की पहचान के लिए होहिं, जाहिं, मिलइ जैसे शब्दरूप याद रखिए।

8(ख). प्रयुक्त अलंकार का नाम और दो उदाहरण लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास में किसी वर्ण या ध्वनि की आवृत्ति से काव्य में सौंदर्य आता है।
- अलंकार बताते समय उसी अंश के शब्द उद्धृत करके आवृत्त ध्वनि दिखानी चाहिए।

चरण 1: अलंकार और पहला उदाहरण काव्यांश में अनुप्रास अलंकार है। इसका पहला उदाहरण 'बारहिं बारा' है। इसमें 'ब' तथा 'र' ध्वनियों की पुनरावृत्ति से लय और ध्वनिसौंदर्य उत्पन्न हुआ है। राम सांसारिक संबंधों के बार-बार मिलने की बात कह रहे हैं; शब्दों की यह आवृत्ति उनके कथन को प्रवाह देती है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण और सौंदर्य दूसरा उदाहरण 'जग' और 'जाहिं' में 'ज' ध्वनि की आवृत्ति है; 'होहिं जाहिं जग बारहिं बारा' में यह ध्वनि स्पष्ट सुनाई देती है। इसी प्रकार अगले चरण में 'जियँ जागहु' में भी 'ज' की पुनरावृत्ति है। प्रश्न के लिए 'बारहिं बारा' तथा 'जियँ जागहु' अनुप्रास के दो स्पष्ट उदाहरण लिखे जा सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रयुक्त अलंकार अनुप्रास है। दो उदाहरण हैं—'बारहिं बारा' में 'ब' की और 'जियँ जागहु' में 'ज' की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: उदाहरण के साथ दोहराया गया वर्ण लिखने से अनुप्रास का उत्तर स्पष्ट बनता है।

8(ग). कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता की संवेदना, संबंध और प्रमुख रस स्पष्ट किए जाते हैं।
- राम का विलाप भाई के प्रति अगाध स्नेह और करुणा व्यक्त करता है।

चरण 1: राम के कथन का भाव मूर्च्छित लक्ष्मण से राम कहते हैं कि पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार संसार में बार-बार प्राप्त हो सकते हैं, पर सगा भाई फिर नहीं मिलता। इस कथन में वे अन्य संबंधों की चर्चा करके सहोदर भाई के अद्वितीय महत्त्व को उभारते हैं। लक्ष्मण के प्रति उनका प्रेम सांसारिक संपत्ति और सुख से कहीं अधिक गहरा है।

चरण 2: करुणा और भ्रातृप्रेम का सौंदर्य 'अस विचारि जियँ जागहु ताता' में राम की व्याकुल पुकार है। वे लक्ष्मण से चेतना में आने का आग्रह करते हैं; संबोधन में स्नेह और उन्हें खो देने की आशंका दोनों हैं। इससे राम का मानवीय, संवेदनशील रूप सामने आता है। काव्यांश का सौंदर्य करुण रस, भाई के प्रति अनन्य लगाव और सरल किंतु मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति में है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में राम का गहरा भ्रातृप्रेम और लक्ष्मण को खो देने की व्याकुलता व्यक्त हुई है। सहोदर भाई की अनुपम महत्ता तथा राम की करुण पुकार इसका भाव-सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय भ्रातृप्रेम, करुण रस और जागने की व्याकुल पुकार को जोड़िए।

अथवा

8. जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें ।
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं ।।
नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में दूसरों की निंदा करने वाले मनुष्यों की संकीर्ण मानसिकता पर व्यंग्य है।
- वक्ता की संयत अभिव्यक्ति बदनामी करने वालों को आत्मनिरीक्षण की प्रेरणा देती है।

चरण 1: कथन का आशय कवि कहता है कि जो लोग उसे बदनाम करते हैं, वे इतना विचार कर लें कि ऐसा करके वे किसका वास्तविक चरित्र सामने ला रहे हैं। दूसरे की बुराई करने की उनकी प्रवृत्ति उनकी अपनी दुर्भावना और संकीर्णता प्रकट करती है।

चरण 2: भाव-सौंदर्य की पहचान यहाँ निंदकों के प्रति क्रोधपूर्ण प्रतिशोध के स्थान पर संयत व्यंग्य मिलता है। "काश" शब्द में उनके विवेक जागने की कामना है। "मेरा परदा" और "अपना परदा" का आमना-सामना कथन को प्रभावशाली बनाता है। दूसरे की प्रतिष्ठा गिराने वाला स्वयं अपने आचरण से अनावृत हो जाता है; यही पंक्तियों का मार्मिक सत्य है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य निंदकों की आत्महीनता पर संयत व्यंग्य और उन्हें अपने आचरण पर विचार करने की प्रेरणा में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय निंदा, आत्मप्रकटीकरण और संयत व्यंग्य को परस्पर जोड़िए।

8(ख). काव्यांश की भाषा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा की विशेषता शब्दचयन, वाक्यरचना और अभिव्यक्ति के प्रभाव से स्पष्ट होती है।
- काव्यांश में बोलचाल की हिंदुस्तानी और मुहावरेदार शैली है।

चरण 1: शब्दावली और वाक्यरचना भाषा सहज, सरल और बोलचाल के निकट है। "मुझको", "इतना", "सोच" जैसे सामान्य शब्दों के साथ "बदनाम" और "परदा" जैसे उर्दू-फ़ारसी प्रचलन के शब्द आए हैं। इनका मेल भाषा को स्वाभाविक हिंदुस्तानी रूप देता है। "करे हैं" और "खोले हैं" जैसे प्रयोग बोलचाल का आत्मीय स्वर उत्पन्न करते हैं।

चरण 2: अभिव्यक्ति का प्रभाव "परदा खोलना" मुहावरे से कम शब्दों में किसी का छिपा चरित्र उजागर होने का गहरा अर्थ व्यक्त हुआ है। "मेरा परदा" और "अपना परदा" की समानांतर रचना तथा "खोले हैं" की आवृत्ति कथन में लय और बल लाती है। प्रश्नात्मक कथन निंदकों पर तीखा किंतु शालीन व्यंग्य करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल, बोलचाल की, मुहावरेदार और व्यंग्यपूर्ण है; शब्दों की आवृत्ति तथा समानांतर वाक्यरचना उसे लयात्मक बनाती है।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ काव्यांश से छोटा शब्द या प्रयोग अवश्य दीजिए।

8(ग). 'परदा खोलना' का प्रयोग-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- "परदा खोलना" का लाक्षणिक अर्थ छिपी वास्तविकता या चरित्र को प्रकट करना है।
- एक ही मुहावरे का दो पक्षों पर प्रयोग कथन में व्यंग्य और अर्थगहनता लाता है।

चरण 1: मुहावरे का प्रसंगगत अर्थ यहाँ "परदा" किसी कपड़े का वास्तविक आवरण नहीं, व्यक्ति के चरित्र की छिपी हुई सच्चाई का संकेत है। "परदा खोलना" किसी के गुप्त दोषों या वास्तविक स्वरूप को सार्वजनिक करने के अर्थ में प्रयुक्त है। निंदक मानते हैं कि वे कवि की कमियाँ उजागर करके उसे बदनाम कर रहे हैं।

चरण 2: प्रयोग की कलात्मकता कवि उसी मुहावरे को उलटकर निंदकों पर लागू कर देता है। दूसरों की बदनामी की कोशिश उनके अपने द्वेष और संकीर्ण विचारों को उजागर करती है। "मेरा" और "अपना" के साथ "परदा खोले हैं" की पुनरावृत्ति इस उलटाव को तीखा बनाती है। इसलिए साधारण मुहावरा आत्मनिरीक्षण की प्रेरणा देने वाले व्यंग्य का माध्यम बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष "परदा खोलना" का प्रयोग निंदा करने वाले की अपनी वास्तविकता उजागर होने का अर्थ देकर भाषा को व्यंग्यपूर्ण, संक्षिप्त और प्रभावशाली बनाता है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का सामान्य अर्थ बताकर समझाइए कि कवि ने उसे निंदक की ओर कैसे मोड़ दिया है।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
कागज के पन्ने की तुलना छोटे चौकोने खेत से करने का आधार स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में कागज़ और खेत की तुलना काव्य-सृजन तथा कृषि की समान प्रक्रिया पर आधारित है।

- खेत की भौतिक फसल और कविता की अक्षय रस-फसल का रूपक सृजन की उपयोगिता स्पष्ट करता है।

चरण 1: आकार तथा भूमि की समानता कागज़ का पन्ना छोटा और चौकोर होता है, इसलिए उसका बाहरी आकार छोटे चौकोने खेत से मिलता है। जिस प्रकार खेत फसल के उगने की भूमि है, उसी प्रकार कागज़ कवि की कल्पना, विचार और भावों को शब्दों में रूप लेने की जगह देता है। इस प्रकार तुलना केवल आकार तक सीमित नहीं रहती।

चरण 2: बीज से काव्य-फसल तक कवि के मन में किसी भावावेग के कारण विचार का बीज पड़ता है। कल्पना उसे विकसित करती है और शब्दों के अंकुर निकलते हैं। रचना क्रमशः पल्लवित होकर कविता का रूप ग्रहण करती है। यह प्रक्रिया खेत में बीज पड़ने, अंकुर फूटने और पौधे के बढ़कर फसल बनने के समान है।

चरण 3: फसल की सार्थकता खेत से अन्न प्राप्त होता है, जबकि कविता से पाठकों को भाव, सौंदर्य और रस की अनुभूति मिलती है। अन्न की फसल कटने और उपयोग होने पर समाप्त हो सकती है; कविता की रस-फसल बार-बार पढ़े जाने पर भी समाप्त नहीं होती। वह अनेक पाठकों को आनंद देती रहती है। इस अक्षय सृजन के कारण कागज़ का छोटा पन्ना भी व्यापक मानवीय उपयोगिता प्राप्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष तुलना का आधार चौकोर आकार के साथ सृजन की समान प्रक्रिया है: खेत में बीज से अन्न और कागज़ पर भाव-विचार से अक्षय काव्य-रस उत्पन्न होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आकार के बाद बीज, कल्पना, शब्द और रस-फसल का क्रम रखिए।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्रण है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर की "उषा" कविता में बदलते रंगों के माध्यम से सुबह के क्रमिक विकास का चित्र है।
- राख, चौका, सिल और खड़िया जैसे घरेलू बिंब सुबह को ग्रामीण जीवन से जोड़ते हैं।

चरण 1: गाँव के जीवन से जुड़े बिंब भोर का नीला आकाश शंख जैसा है। उसे राख से लीपे गए गीले चौके के रूप में भी देखा गया है। यह बिंब गाँव के घर-आँगन और सुबह की घरेलू तैयारी की याद दिलाता है। काली सिल पर लाल केसर तथा स्लेट पर लाल खड़िया की कल्पनाएँ परिचित घरेलू वस्तुओं से बनी हैं; इसलिए दृश्य आत्मीय और ग्राम्य परिवेश के निकट लगता है।

चरण 2: रंगों और प्रकाश का निरंतर परिवर्तन कविता किसी एक क्षण का स्थिर चित्र नहीं देती। भोर के अँधेरे और नीलेपन में क्रमशः लालिमा उभरती है। काली सिल पर लाल केसर का बिंब अँधेरे में फैलती उजास का आभास देता है। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह की कल्पना प्रकाश की चमक और कंपन को सजीव करती है। एक बिंब से दूसरे बिंब में जाना ही बदलते सुबह के दृश्य को सामने लाता है।

चरण 3: सूर्योदय के साथ दृश्य का विकास अंत में सूर्योदय होता है और उषा का जादू टूट जाता है। यह अंत बताता है कि चित्र अँधेरे से उजाले की ओर बढ़ रहा था। रंगों की बदलती छटाएँ, झिलमिलाहट और सूर्य के उदय का क्रम मिलकर सुबह को गतिशील बनाते हैं। परिचित ग्रामीण उपमान इस प्राकृतिक परिवर्तन को गाँव की सुबह का रूप देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष "उषा" गाँव की घरेलू वस्तुओं से बने बिंबों और अँधेरे से सूर्योदय तक बदलते रंग-प्रकाश के क्रम द्वारा ग्रामीण सुबह का गतिशील चित्र प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: ग्रामीण बिंबों के उदाहरण देने के साथ रंग बदलने और सूर्योदय तक पहुँचने का क्रम स्पष्ट कीजिए।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कैमरे में बन्द अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता पीड़ित मनुष्य के दुख को तमाशा बनाने वाली मीडिया-प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- संवेदना का वास्तविक अर्थ पीड़ित की गरिमा का सम्मान है; उसे रुलाकर प्रदर्शन करना उसका विपरीत है।

चरण 1: प्रश्नों के माध्यम से मानसिक पीड़ा दूरदर्शन के कार्यक्रम में अपाहिज व्यक्ति को अपने दुख के प्रदर्शन का माध्यम बनाया जाता है। उससे ऐसे प्रश्न किए जाते हैं जो उसकी असमर्थता का बार-बार बोध कराते हैं। संचालक उसके अनुभव को धैर्य से सुनने के स्थान पर उससे अपनी अपेक्षा के अनुसार दुख व्यक्त करवाना चाहता है। इससे पीड़ित की असहजता और बढ़ती है।

चरण 2: रोने का दृश्य प्राप्त करने की चाह कार्यक्रम बनाने वालों का लक्ष्य उसके दुख को समझकर सहायता करना नहीं, कैमरे पर ऐसा दृश्य प्राप्त करना है जो दर्शकों को भावुक कर दे। वे उसकी पीड़ा और आँसुओं को कार्यक्रम की सफलता से जोड़ते हैं। कैमरा, प्रश्न और भावुकता की अपेक्षा उसके निजी दुख को सार्वजनिक तमाशे में बदल देते हैं।

चरण 3: करुणा और व्यावसायिक व्यवहार का विरोध संचालक स्वयं को समर्थ और संवेदनशील दिखाता है, पर अपाहिज व्यक्ति की इच्छा, संकोच तथा गरिमा की उपेक्षा करता है। कार्यक्रम का समय और दर्शकों की प्रतिक्रिया उसके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस प्रकार सहायता और करुणा का दावा करने वाले लोगों का आचरण ही उनकी संवेदनहीनता उजागर करता है। कवि इसी बनावटी सहानुभूति पर प्रहार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता दिखाती है कि पीड़ित की गरिमा की उपेक्षा कर उसके दुख और आँसुओं को कैमरे का तमाशा बनाना संवेदना का प्रदर्शन है, वास्तविक संवेदनशीलता नहीं।

त्वरित सुझाव: अपाहिज की पीड़ा, संचालक के प्रश्न और आँसू दिखाने की चाह को जोड़कर संवेदनहीनता स्पष्ट कीजिए।

---

10. बाज़ार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा । कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है ! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ । सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है । पर यह सब जादू का असर है । जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है । थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है । पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है । जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी ?

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). बाज़ार के जादू से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में बाज़ार दर्शन के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: रूप के आकर्षण का अर्थ गद्यांश में जादू को स्पष्ट रूप से रूप का जादू कहा गया है। इसीलिए यहाँ जादू का आशय किसी अलौकिक शक्ति से नहीं, वस्तुओं की बाहरी सजावट और सुंदरता से उत्पन्न आकर्षण से है। देखने वाला अपनी वास्तविक आवश्यकता को भूलकर उन वस्तुओं की ओर खिंचता है।

चरण 2: इस आकर्षण का परिणाम समझें व्यक्ति के मन में यह भी लूँ और वह भी लूँ की इच्छा उठती है। उसे अनावश्यक वस्तुएँ भी उपयोगी लगने लगती हैं। अतः बाज़ार का जादू वह दृश्य सम्मोहन है जो व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक सामान खरीदने के लिए प्रेरित

करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू वस्तुओं के सुंदर और आकर्षक रूप का सम्मोहन है। यह आँखों के रास्ते मन पर प्रभाव डालता है। वस्तुओं को देखकर व्यक्ति को लगता है कि वे सभी उसके लिए आवश्यक और आराम बढ़ाने वाली हैं।

त्वरित सुझाव: बाज़ार के जादू का उत्तर देते समय आँख, रूप और अनावश्यक खरीद की इच्छा को एक कारण-परिणाम क्रम में जोड़ें।

10(ख). बाज़ार का जादू कब अधिक प्रभावी होता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में बाज़ार दर्शन के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: प्रभाव की अनुकूल स्थिति लेखक कहता है कि जेब भरी हो और मन खाली हो तो जादू का असर खूब होता है। यहाँ भरी जेब क्रय-शक्ति की और खाली मन इच्छाओं के प्रति असंयम की स्थिति बताता है। व्यक्ति तय नहीं कर पाता कि उसे सचमुच किन वस्तुओं की आवश्यकता है।

चरण 2: कारण को स्थिति से जोड़ें खाली मन तक बाज़ार की अनेक वस्तुओं का निमंत्रण पहुँच जाता है। धन उपलब्ध होने पर वह अपनी इच्छा को तत्काल पूरा कर सकता है। इसलिए सभी चीजें ज़रूरी और आरामदायक प्रतीत होती हैं तथा यह भी लूँ, वह भी लूँ की प्रवृत्ति बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू तब सबसे अधिक प्रभावी होता है जब जेब भरी हो और मन खाली हो। व्यक्ति के पास खरीदने के लिए धन होता है, पर अपने मन में आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान और संतोष नहीं होता।

त्वरित सुझाव: भरी जेब को खरीदने की क्षमता और खाली मन को अनिश्चित आवश्यकताओं से जोड़कर जादू की प्रभावशीलता समझाएँ।

10(ग). जादू का प्रभाव समाप्त होने पर क्या अनुभव होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में बाज़ार दर्शन के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: सम्मोहन के बाद वास्तविकता गद्यांश में जादू की सवारी उतरने का अर्थ आकर्षण का प्रभाव समाप्त होना है। खरीदारी के समय सुंदर वस्तुओं को देखकर व्यक्ति उनके उपयोग और अपनी आवश्यकता का विवेकपूर्ण आकलन नहीं कर पाता। आकर्षण घटने पर वही सामान सुख का साधन प्रतीत नहीं होता।

चरण 2: आराम और अभिमान का अंतर लेखक के अनुसार इन वस्तुओं से स्वाभिमान को थोड़ी देर के लिए सेंक मिल सकता है, पर स्थायी सुख नहीं मिलता। उलटे अभिमान को और पोषण मिलता है। इस प्रकार बाहरी वस्तुओं के संग्रह की निरर्थकता और उससे पैदा होने वाले बंधन का अनुभव होता है।

चरण 3: निष्कर्ष जादू का प्रभाव समाप्त होने पर पता चलता है कि फैंसी वस्तुओं की अधिकता आराम बढ़ाने के बजाय जीवन में खलल डालती है। खरीदते समय जो सामान आवश्यक लगता था, बाद में उसका अनावश्यक होना समझ में आता है।

त्वरित सुझाव: जादू उतरने के बाद का अनुभव लिखते समय आराम के स्थान पर खलल और स्थायी सुख के स्थान पर क्षणिक अहं-संतोष बताएँ।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए 'अभिमान की गिल्टी को और खुराक मिलती है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में बाज़ार दर्शन के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: रूपक का संकेत गिल्टी शरीर में बनी गाँठ होती है। लेखक ने अभिमान को ऐसी गाँठ के रूप में प्रस्तुत किया है जो बाहरी सामान से मिलने वाले संतोष के कारण मिटती नहीं, बल्कि और पुष्ट होती है। खुराक मिलने का अर्थ इस अहंभाव को पोषण मिलना है।

चरण 2: संदर्भ में आशय स्पष्ट करें फैंसी वस्तुओं की बहुतायत से वास्तविक आराम नहीं बढ़ता। व्यक्ति को कुछ समय अपने महत्व का अनुभव अवश्य होता है, किंतु वह क्षणिक अनुभूति उसके अहंकार को बल देती है। अधिक वस्तुएँ रखना उसे बंधन में डालता है; वस्तुओं की चमक इस बंधन को समाप्त नहीं करती।

चरण 3: निष्कर्ष अभिमान की गिल्टी को खुराक मिलने का आशय है कि दिखावे की वस्तुएँ खरीदने से व्यक्ति का अहंकार और बढ़ता है। वह वस्तुओं के स्वामित्व को अपनी श्रेष्ठता समझने लगता है और अधिक संग्रह की इच्छा करता है।

त्वरित सुझाव: गिल्टी को अहंकार की गाँठ तथा खुराक को उसके पोषण के अर्थ में खोलें; दिखावे की खरीद से संबंध अवश्य बताएँ।

अथवा

10. दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे । अत: दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था । प्रतिदिन प्रात:काल पहलवान स्वयं ढोलक बजाकर दोनों से कसरत करवाता । दोपहर में, लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता – "समझे ! ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना । हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे ! ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ । दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे !" ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता । फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था ।

नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). पहलवान के बेटों का भरण-पोषण राज-दरबार से क्यों होता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में पहलवान की ढोलक के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: दरबार के संरक्षण का आधार गद्यांश का आरंभ ही दोनों लड़कों को राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित किए जाने से होता है। इसके तुरंत बाद अत: शब्द से उनके भरण-पोषण का कारण बताया गया है। इस स्पष्ट संबंध के आधार पर उत्तर देना चाहिए।

चरण 2: प्रशिक्षण से संबंध स्पष्ट करें दोनों बेटों को पहलवान स्वयं प्रतिदिन कसरत कराता और व्यवहार की शिक्षा देता था। वे भविष्य की भूमिका के लिए तैयार किए जा रहे थे। उनके पालन-पोषण का व्यय दरबार उठाता था क्योंकि वे उसके संरक्षण में भावी पहलवान थे। यह केवल पिता के स्नेह का नहीं, दरबारी स्वीकृति का परिणाम था।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान के दोनों बेटे राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। इसी कारण उनका भरण-पोषण राज-दरबार की ओर से होता था। दरबार ने उन्हें भविष्य में पहलवानी करने वाले अपने पहलवानों के रूप में स्वीकार कर लिया था।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के आरंभ में आए अत: शब्द के पहले कारण देखें: दोनों पुत्र दरबार के भावी पहलवान घोषित थे।

10(ख). पहलवान अपने पुत्रों को क्या शिक्षा दिया करता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में पहलवान की ढोलक के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: शारीरिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण वह प्रातःकाल स्वयं ढोलक बजाकर दोनों पुत्रों से कसरत करवाता था। उन्हें समझाता था कि ढोलक उसकी गुरु है और उसकी आवाज़ के प्रताप से ही वह पहलवान बना। इसलिए अभ्यास में ढोलक की लय पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

चरण 2: सांसारिक शिक्षा को भी शामिल करें दोपहर में वह पुत्रों को जीवन-व्यवहार की बातें सिखाता था। मालिक को कैसे खुश रखा जाए और किस अवसर पर कैसा व्यवहार किया जाए, यह भी उसके प्रशिक्षण का अंग था। इस प्रकार उसकी शिक्षा में शरीर का अभ्यास, गुरु के प्रति आदर और व्यावहारिक समझ तीनों शामिल थे।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान अपने पुत्रों को ढोलक की आवाज़ पर ध्यान देकर कसरत करने और दंगल में उतरने से पहले ढोलों को प्रणाम करने की शिक्षा देता था। साथ ही वह मालिक को प्रसन्न रखने और परिस्थिति के अनुसार व्यवहार करने का सांसारिक ज्ञान भी देता था।

त्वरित सुझाव: शिक्षा के उत्तर में सुबह की कसरत, ढोलों को प्रणाम और दोपहर का सांसारिक व्यवहार, तीनों पहलू शामिल करें।

10(ग). लुट्टन किसे अपना गुरु मानता था और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में पहलवान की ढोलक के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: गुरु की पहचान गद्यांश में वह साफ कहता है कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है। यह कथन उसके विश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वह अपनी पहलवानी की सफलता और प्रशिक्षण में ढोल की आवाज़ को निर्णायक महत्व देता है।

चरण 2: गुरुभाव के व्यवहारिक प्रमाण उसका विश्वास केवल कथन तक सीमित नहीं है। वह स्वयं ढोलक बजाकर बेटों से कसरत करवाता है और उन्हें ढोल की आवाज़ पर पूरा ध्यान देने की सीख देता है। दंगल में सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करने का निर्देश उसके सम्मान और कृतज्ञता को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष लुट्टन ढोलक को अपना गुरु मानता था। उसका विश्वास था कि ढोल की आवाज़ के प्रताप से ही वह पहलवान बना है। इसी कारण वह अपने पुत्रों को भी ढोलक की आवाज़ पर ध्यान देने और दंगल से पहले ढोलों को प्रणाम करने को कहता था।

त्वरित सुझाव: गुरु वाले उत्तर में ढोल की पहचान के साथ उसके प्रताप से पहलवान बनने का कारण और प्रणाम का प्रमाण दें।

10(घ). आज गाँवों में अखाड़े समाप्त हो रहे हैं, इसके क्या कारण हो सकते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्र में पहलवान की ढोलक के दिए गए प्रसंग का आशय और कारणों की समझ है।
- उत्तर में प्रश्न के मुख्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके संबंधित तथ्य या तर्क से उसका समर्थन करना चाहिए।

चरण 1: परिवर्तन के संभावित कारण गद्यांश में पहलवान और उसके बेटों को दरबार का संरक्षण प्राप्त है तथा नियमित कसरत की व्यवस्था है। इससे समझ में आता है कि अखाड़े चलाने के लिए प्रशिक्षण, समय और संसाधन आवश्यक हैं। आज ऐसे सहयोग तथा अनुभवी प्रशिक्षकों की कमी अखाड़ों को कमजोर कर सकती है।

चरण 2: आधुनिक जीवन की परिस्थितियाँ खेल के मैदानों पर निर्माण, पौष्टिक भोजन और प्रशिक्षण का खर्च, रोजगार की व्यस्तता तथा अन्य खेलों या मनोरंजन के प्रति आकर्षण भी संभावित कारण हैं। प्रश्न संभावना पूछता है, इसलिए इन्हें तार्किक कारणों के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए; इन्हें गद्यांश की प्रत्यक्ष घटनाएँ नहीं कहना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष गाँवों में अखाड़ों के समाप्त होने के कारण नियमित आर्थिक संरक्षण का अभाव, अभ्यास के लिए स्थान की कमी और युवाओं की बदलती जीवनचर्या हो सकते हैं। पढ़ाई तथा रोजगार के लिए पलायन से भी परंपरागत पहलवानी का अभ्यास कम होता है।

त्वरित सुझाव: अखाड़ों के क्षय के कारण लिखते समय संरक्षण, स्थान, प्रशिक्षक और युवाओं के समय की कमी से जुड़े व्यावहारिक तर्क दें।

11(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गईं, कैसे ? सोदाहरण लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के व्यक्तित्व की दृढ़ता और लेखिका के प्रति आत्मीयता उसके व्यवहार को समझने की कुंजी हैं।
- खान-पान, भाषा और रहन-सहन के ठोस उदाहरणों से कथन की पुष्टि करनी चाहिए।

चरण 1: संबंध में प्रभाव की दिशा समझिए भक्तिन महादेवी की सेविका अवश्य थी, किंतु वह अपनी देहाती आदतों और जीवन-पद्धति को छोड़कर शहर के रंग में नहीं रंगी। उसका व्यक्तित्व इतना दृढ़ था कि लेखिका को ही अनेक बातों में उसके अनुसार ढलना पड़ा। इसीलिए महादेवी कहती हैं कि भक्तिन के आ जाने से वे अधिक देहाती हो गईं। यह कथन उनके बीच की आत्मीयता और भक्तिन के प्रभाव को भी व्यक्त करता है।

चरण 2: खान-पान और भाषा के उदाहरण दीजिए भक्तिन ने महादेवी को देहाती ढंग का भोजन खाना सिखा दिया। मोटी रोटी, गाढ़ी दाल, मक्के का दलिया और बाजरे के तिलवाले पुए जैसी ग्रामीण चीजें उनके भोजन का हिस्सा बन गईं। भक्तिन अपने भोजन और पकाने की पद्धति में सहज विश्वास रखती थी। उसकी संगति से महादेवी की भाषा में भी ग्रामीण शब्दों और बोलचाल का प्रवेश हुआ। इसके विपरीत भक्तिन ने लेखिका की शहरी भाषा और रीति को अपना लेने का प्रयास नहीं किया। इस प्रभाव में किसी औपचारिक शिक्षा का योगदान नहीं था; यह साथ रहने से पैदा हुआ सहज परिवर्तन था, जिसमें भक्तिन के अनुभव और आत्मविश्वास की भूमिका थी।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार भक्तिन ने महादेवी के खान-पान और भाषा को ग्रामीण रंग दिया। सेविका होकर भी उसने अपने दृढ़ स्वभाव और स्नेह से लेखिका के दैनिक जीवन को प्रभावित किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल प्रभाव की बात न कहें; देहाती भोजन और ग्रामीण भाषा, दोनों के उदाहरण जोड़ें।

11(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'गगरी फूटी – बैल पियासा' से लेखक का क्या आशय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकगीत का प्रत्यक्ष अर्थ जल के अभाव और पशुओं की प्यास से जुड़ा है।
- पाठ के अंतिम प्रसंग में यही पंक्ति योजनाओं के लाभ से वंचित जनता की स्थिति का प्रतीक बनती है।

चरण 1: लोकगीत का सीधा अर्थ स्पष्ट कीजिए गगरी फूट जाने पर उसमें पानी नहीं ठहरता और प्यासे बैल को पानी नहीं मिलता। इंदर सेना के गीत में यह पंक्ति वर्षा के अभाव से उत्पन्न संकट को व्यक्त करती है। बैल खेती का प्रमुख सहायक है; उसका प्यासा रहना किसान की खेती और जीविका के संकट का संकेत भी है। अतः पानी की माँग केवल व्यक्तिगत प्यास बुझाने की माँग नहीं, पूरे ग्रामीण जीवन की आवश्यकता है।

चरण 2: लेखक का व्यापक आशय समझाइए लेखक इसी चित्र के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद की स्थिति पर भी व्यंग्य करता है। देश के विकास के लिए योजनाएँ बनती हैं और धन खर्च होता है, पर भ्रष्टाचार, स्वार्थ तथा अव्यवस्था के कारण उनका लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता। योजनाओं और धन की वर्षा के बावजूद साधारण जनता की आवश्यकताएँ अधूरी रहती हैं। फूटी गगरी संसाधनों को व्यर्थ कर देने वाली व्यवस्था और प्यासा बैल लाभ से वंचित परिश्रमी जन का बिंब बन जाता है। लेखक इस विडंबना के लिए केवल शासन को नहीं, अपने स्तर पर भ्रष्ट आचरण में भाग लेने वाले लोगों को भी जिम्मेदार ठहराता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का आशय है कि साधन उपलब्ध होने और विकास के प्रयास होने पर भी व्यवस्था की खराबियों के कारण आम जन अभावग्रस्त रह जाते हैं। संसाधनों का उचित उपयोग और जनहित तक उनका पहुँचना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: पंक्ति का अर्थ लिखते समय पहले सूखे का प्रसंग, फिर योजनाओं और भ्रष्टाचार पर उसका व्यंग्यात्मक आशय स्पष्ट करें।

11(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

उन संघर्षों का उल्लेख कीजिए जिनसे टकराते-टकराते चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व में निखार आता चला गया । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली के हास्य में निजी जीवन की पीड़ा और सामान्य मनुष्य की जिजीविषा साथ दिखाई देती हैं।
- जीवन की कठिनाइयों और उनकी कला पर पड़े प्रभाव का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: बचपन की कठिनाइयाँ बताइए चार्ली चैप्लिन का बचपन घोर गरीबी, भूख और असुरक्षा के बीच बीता। पिता से अलगाव और माँ की बीमारी ने पारिवारिक सहारे को कमजोर कर दिया। माँ की मानसिक अस्वस्थता तथा उसके इलाज से जुड़ी परिस्थितियों ने उन्हें छोटी उम्र में ही जीवन की कठोरता से परिचित करा दिया। सामान्य बच्चे को मिलने वाली सुरक्षा और सुविधा उनके पास नहीं थी। इसलिए अभाव और दुख उनके लिए केवल कल्पना के विषय नहीं, भोगे हुए अनुभव थे।

चरण 2: संघर्षों से कला और व्यक्तित्व के विकास को जोड़िए जीविका के लिए छोटी उम्र से काम करना, रंगमंच पर जगह बनाना और उपेक्षा व असफलताओं का सामना करना उनके संघर्ष के अगले चरण थे। इन परिस्थितियों ने उन्हें साधारण आदमी की बेबसी समझना सिखाया। वे दुख के आगे टूटने के बजाय उससे हास्य पैदा करने लगे। उनकी कला में भूखे, कमजोर और अपमानित मनुष्य के प्रति करुणा बनी रही। अपने ऊपर भी हँस सकने की क्षमता तथा विपरीत स्थितियों में टिके रहने का साहस उनके व्यक्तित्व को निरंतर निखारता गया।

चरण 3: निष्कर्ष गरीबी, भूख, पारिवारिक संकट और कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा पाने के संघर्ष ने चार्ली को संवेदनशील और जुझारू बनाया। इन्हीं अनुभवों से उनकी करुणा से भरी हास्य-कला विकसित हुई।

त्वरित सुझाव: संघर्षों की सूची के बाद यह अवश्य लिखें कि उनसे चार्ली में करुणा, आत्मपरिहास और जिजीविषा कैसे विकसित हुई।

11(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'नमक' कहानी में क्या संदेश छिपा हुआ है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी राष्ट्रीय सीमाओं के पार बने रहने वाले मानवीय संबंधों को सामने लाती है।
- नमक जन्मभूमि की स्मृति, अपनत्व और साझा सांस्कृतिक जीवन का प्रतीक है।

चरण 1: सिख बीबी की इच्छा से संदेश समझिए रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में सिख बीबी लाहौर को अपनी जन्मभूमि की तरह याद करती हैं और वहाँ का नमक मँगाती हैं। यह कोई मूल्यवान वस्तु पाने की इच्छा नहीं है। नमक में उनके बचपन, अपनेपन और छूटे हुए घर की स्मृतियाँ समाई हुई हैं। विभाजन ने उनका रहने का स्थान बदल दिया, पर लाहौर से उनका भावनात्मक लगाव समाप्त नहीं हुआ। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक बँटवारा मनुष्य के हृदय को आसानी से नहीं बाँट सकता।

चरण 2: सफ़िया और सीमा-अधिकारियों के व्यवहार का अर्थ बताइए सफ़िया बीबी की भावना का सम्मान करते हुए नमक लाने का प्रयास करती है। सीमा पर नियमों की चर्चा होने के बावजूद जन्मभूमि की स्मृति सामने आते ही अधिकारियों का मानवीय पक्ष उभर आता है। अपने छूटे स्थानों के प्रति उनका लगाव भी सामने आता है। इस प्रकार कहानी अलग-अलग धर्मों और देशों के लोगों में समान दुख, स्मृति और आत्मीयता दिखाती है। संदेह और औपचारिक प्रतिबंधों से ऊपर उठकर वे एक-दूसरे की भावना समझ सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी का संदेश है कि प्रेम, मनुष्यता और जन्मभूमि की स्मृतियाँ धर्म तथा देश की सीमाओं से बड़ी हैं। विभाजन के बावजूद साझा संस्कृति और मानवीय अपनापन लोगों को जोड़ते रहते हैं।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल खाने की वस्तु न मानें; सिख बीबी की स्मृति और सफ़िया के आत्मीय प्रयास से उसका प्रतीकात्मक अर्थ समझाएँ।

11(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

डॉ. आम्बेडकर के मतानुसार दासता की व्यापक परिभाषा क्या है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दासता को केवल कानूनी पराधीनता तक सीमित नहीं किया जा सकता।
- पेशा चुनने की स्वतंत्रता का हनन भी सामाजिक दासता का रूप है।

चरण 1: संकीर्ण और व्यापक अर्थ का अंतर बताइए सामान्यतः दासता का अर्थ किसी व्यक्ति को दूसरे का कानूनी गुलाम बना देना समझा जाता है। डॉ. आम्बेडकर इस अर्थ को अपर्याप्त मानते हैं। उनके अनुसार दासता में वह स्थिति भी आती है जिसमें कुछ लोग दूसरे लोगों के आचरण और व्यवसाय का निर्धारण कर देते हैं। व्यक्ति कानूनी रूप से स्वतंत्र दिखाई दे सकता है, फिर भी यदि उसे दूसरों द्वारा निर्धारित जीवन-पद्धति अपनानी पड़े तो उसकी वास्तविक स्वतंत्रता बाधित है।

चरण 2: जाति और वंशानुगत पेशे से संबंध स्पष्ट कीजिए जाति-व्यवस्था में व्यक्ति को अपनी रुचि, योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। जन्म के आधार पर उसके लिए पेशा निश्चित कर दिया जाता है और सामाजिक दबाव उसे वही काम करने को विवश करता है। यह प्रत्यक्ष कानूनी गुलामी न होते हुए भी दूसरे के आदेश के अनुसार जीवन बिताने की स्थिति है। अपनी क्षमता विकसित करने और जीविका का मार्ग बदलने का अधिकार छिन जाने से व्यक्ति दूसरों की इच्छा पर आश्रित हो जाता है। इसी अर्थ में आम्बेडकर ऐसी व्यवस्था को दासता मानते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आम्बेडकर के अनुसार दासता वह सामाजिक स्थिति भी है जिसमें कुछ व्यक्ति दूसरों के व्यवहार और व्यवसाय पर नियंत्रण रखते हैं। जन्म के आधार पर पेशा थोपना और अपनी इच्छा से काम चुनने से रोकना इसी व्यापक दासता का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में आचरण और व्यवसाय पर दूसरों का नियंत्रण लिखें, फिर जाति द्वारा पेशा निर्धारित करने का उदाहरण दें।

12(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बेटे द्वारा भेंट किए गए ड्रेसिंग गाउन को पहनते हुए यशोधर बाबू को कौन सी बात चुभ गई और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में उपहार के पीछे छिपी पारिवारिक अपेक्षा और यशोधर बाबू की संवेदना समझना आवश्यक है।
- पीढ़ियों के अंतर के कारण बेटे का व्यावहारिक कथन पिता को आत्मीयता की कमी का अनुभव कराता है।

चरण 1: चुभने वाली बात ड्रेसिंग गाउन देते समय बेटे ने कहा था कि वे सुबह दूध लेने जाते समय इसे पहन सकते हैं। गाउन पहनते हुए यशोधर बाबू को यही बात चुभ गई। उन्हें लगा कि बेटे ने उनके लिए नया वस्त्र तो खरीदा, पर उसके मन में पिता का रोज दूध लाने जाना पहले की तरह निश्चित बना हुआ है।

चरण 2: चुभन का कारण वे चाहते थे कि पुत्र कभी यह भी कहे कि अब दूध लाने का काम वह स्वयं कर लिया करेगा और पिता आराम करें। महँगा उपहार मिलने पर भी सेवा और दायित्व बाँटने की ऐसी भावना दिखाई नहीं दी। इसलिए उनकी पीड़ा गाउन के मूल्य या रूप को लेकर नहीं, बेटे की संवेदनहीन व्यावहारिकता तथा अपने प्रति आत्मीय चिंता के अभाव को लेकर थी।

चरण 3: निष्कर्ष उन्हें बेटे का गाउन पहनकर दूध लेने जाने वाला सुझाव चुभा, क्योंकि वे उपहार के साथ बेटे से अपने श्रम की चिंता और जिम्मेदारी बाँटने की भावना भी चाहते थे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दूध लाने का प्रसंग और पिता की सेवा की अपेक्षा को जोड़ें; केवल पीढ़ियों का अंतर लिखकर न रुकें।

12(ख). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'यह खेती हमें गड्ढे में ढकेल रही है' – बालक आनंद यादव के इस कथन के पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का मूल्यांकन आनंद की पारिवारिक परिस्थिति और शिक्षा की आकांक्षा के संदर्भ में किया जाता है।
- दोनों तर्क पाठ के प्रसंगों से समर्थित होने चाहिए; यहाँ कथन के पक्ष में उत्तर दिया गया है।

चरण 1: पहला तर्क: मेहनत के बाद भी अभाव आनंद का कथन उसकी परिस्थिति में उचित है। खेती में पूरे परिवार का श्रम लगने पर भी घर की गरीबी दूर नहीं होती थी। पिता उसे खेत पर लगाए रखना चाहते थे; बालक की मेहनत परिवार की तत्काल जरूरतों में खप जाती थी। इस प्रकार खेती उसके लिए आर्थिक उन्नति का विश्वसनीय मार्ग नहीं बन रही थी।

चरण 2: दूसरा तर्क: शिक्षा और भविष्य में बाधा खेत के काम के कारण उसकी पढ़ाई छूट गई थी। वह समझता था कि इसी काम में फँसे रहने पर उसका भविष्य भी पिता की तरह अभाव में बीतेगा। शिक्षा से नौकरी, समझ और उन्नति की संभावना थी, किंतु पिता की जिद उसे उससे वंचित कर रही थी। इसलिए खेती उसके संदर्भ में गरीबी से निकालने के बजाय उसी स्थिति में बनाए रखने का कारण बन रही थी।

चरण 3: निष्कर्ष कथन के पक्ष में दो तर्क हैं: खेती की निरंतर मेहनत से भी गरीबी नहीं मिट रही थी और खेत के काम ने आनंद की पढ़ाई तथा भविष्य की प्रगति रोक दी थी।

त्वरित सुझाव: खेती को सामान्य रूप से बुरा बताने के बजाय आनंद के अभाव और पढ़ाई छूटने के दो प्रसंग लिखें।

12(ग). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सिंधु घाटी सभ्यता में किन-किन कृषि उपजों के उत्पादन के प्रमाण प्राप्त होते हैं ? 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक प्रमाण और विद्वानों के अनुमान में अंतर रखते हुए कृषि उपजों की पहचान करनी है।
- पाठ सिंधु सभ्यता के विकसित कृषि जीवन को खुदाई में प्राप्त साक्ष्यों से जोड़ता है।

चरण 1: प्रमाणित उपजें पाठ के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता में कपास, गेहूँ, जौ, सरसों और चने की खेती के पुख्ता प्रमाण खुदाई में मिले हैं। इनमें गेहूँ और जौ खाद्यान्न हैं, चना दलहन है, सरसों तिलहन है और कपास वस्त्र निर्माण के लिए उपयोगी उपज है। यह विविधता वहाँ के कृषि जीवन के विकास को दर्शाती है।

चरण 2: अन्य कृषि संबंधी उल्लेख पाठ में खजूर, खरबूजे और अंगूर उगाए जाने का भी उल्लेख है। कुछ विद्वान ज्वार, बाजरा और रागी की उपज होने की संभावना भी मानते हैं। उत्तर देते समय इन संभावनाओं को खुदाई से मिले पुख्ता प्रमाणों की सूची के समान निश्चित न बताना चाहिए। मुख्य उत्तर प्रमाणित पाँच उपजों की स्पष्ट सूची है।

चरण 3: निष्कर्ष खुदाई से कपास, गेहूँ, जौ, सरसों और चने के उत्पादन के पुख्ता प्रमाण मिले हैं। पाठ में खजूर, खरबूजे और अंगूर की खेती का भी उल्लेख है।

त्वरित सुझाव: पहले पाँच प्रमाणित उपजों की सूची लिखें; ज्वार, बाजरा और रागी को केवल विद्वानों का मत बताएं।

13(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यशोधर पंत की तीन चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की प्रत्येक विशेषता को कहानी की घटना या व्यवहार से प्रमाणित करना चाहिए।
- यशोधर पंत के संस्कार, सादगी और पारिवारिक संवेदना उनके व्यक्तित्व की मुख्य दिशाएँ हैं।

चरण 1: परंपरागत संस्कारों के प्रति निष्ठा यशोधर पंत पुराने संस्कारों और जीवन मूल्यों से गहरे जुड़े हुए हैं। किशनदा उनके आदर्श हैं और वे उनकी बातों को व्यवहार की कसौटी बनाते हैं। अपने विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित आधुनिक ढंग की पार्टी उन्हें सहज नहीं लगती। वे ऐसे अवसर पर पूजा और धार्मिक विधि को अधिक उचित मानते हैं। यह प्रसंग उनकी परंपरानिष्ठा दिखाता है।

चरण 2: सादगी और दिखावे से दूरी वे सरल जीवन और संयमित व्यवहार पसंद करते हैं। परिवार की नई जीवनशैली तथा भव्य आयोजन उन्हें असहज करते हैं। पुत्र की कमाई से आई नई सुविधाओं और आधुनिक तौर-तरीकों को वे तुरंत नहीं अपना पाते। उनके लिए बाहरी चमक से अधिक महत्त्व जीवन की मर्यादा और अपने पुराने अनुभवों का है। इसी कारण आधुनिक परिवार में वे कुछ अलग दिखाई देते हैं।

चरण 3: संवेदनशील और आत्मीयता के आकांक्षी ऊपर से पुरातनपंथी दिखने पर भी वे भीतर से अत्यंत भावुक हैं। बेटे के दिए ड्रेसिंग गाउन के साथ दूध लाने जाने का सुझाव उन्हें चुभता है। उन्हें इच्छा होती है कि बेटा कभी स्वयं दूध लाने की जिम्मेदारी लेकर उन्हें आराम करने को कहे। इससे पता चलता है कि वे महँगे उपहार से बढ़कर स्नेह, सेवा और अपनापन चाहते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत परंपरानिष्ठ, सादगीप्रिय और संवेदनशील व्यक्ति हैं। किशनदा से लगाव, आधुनिक पार्टी से असहजता और ड्रेसिंग गाउन वाला प्रसंग इन विशेषताओं को स्पष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: तीन अलग विशेषताएँ चुनें और हर एक के तुरंत बाद कहानी का ठोस उदाहरण दें।

13(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ऐन की डायरी निजी कहानी न होकर तत्कालीन समाज का दर्पण है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निजी अनुभव जब अपने समय की व्यापक परिस्थितियाँ दिखाते हैं, तब वे सामाजिक दस्तावेज बन जाते हैं।
- ऐन फ्रैंक की डायरी में किशोरी की अनुभूतियों के साथ युद्ध और यहूदी उत्पीड़न का यथार्थ दर्ज है।

चरण 1: निजी जीवन में सामाजिक संकट की उपस्थिति ऐन की डायरी में उसके मन के भाव, पारिवारिक संबंध और आकांक्षाएँ हैं, किंतु उनका परिवेश द्वितीय विश्वयुद्ध तथा नाजियों द्वारा यहूदियों का दमन है। परिवार का गुप्त स्थान पर छिपकर रहना निजी चुनाव नहीं, जान बचाने की विवशता है। इस एक परिवार की कहानी से उस समय असंख्य यहूदी परिवारों की असुरक्षा और बेबसी सामने आती है।

चरण 2: भय और अभाव से प्रभावित सामान्य जीवन छिपे हुए लोगों को आवाज करने, बाहर निकलने और सामान्य जीवन जीने की स्वतंत्रता नहीं थी। पकड़े जाने की आशंका उनके दैनिक व्यवहार तक को नियंत्रित करती थी। युद्ध के कारण आवश्यक वस्तुओं की कमी, अनिश्चितता और तनाव भी जीवन को प्रभावित करते थे। इस प्रकार डायरी बताती है कि राजनीतिक हिंसा और युद्ध केवल सैनिकों तक सीमित नहीं रहते, वे साधारण लोगों के घर और मन तक पहुँचते हैं।

चरण 3: मानवीय आकांक्षाओं का दस्तावेज ऐन की शिक्षा, लेखन, स्वतंत्रता और भविष्य की इच्छाएँ दिखाती हैं कि दमन के बीच भी मनुष्य आशा बनाए रखता है। किशोरी की संवेदना से स्त्रियों की स्थिति, पारिवारिक तनाव और मनुष्य के अधिकारों के प्रश्न भी सामने आते हैं। इसलिए डायरी इतिहास की बड़ी घटनाओं के भीतर सामान्य मनुष्य की यातना और जिजीविषा का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन की डायरी तत्कालीन समाज का दर्पण है, क्योंकि उसके निजी अनुभवों में युद्ध, यहूदी उत्पीड़न, भय, अभाव और स्वतंत्र जीवन की आकांक्षा का व्यापक सामाजिक यथार्थ प्रतिबिंबित होता है।

त्वरित सुझाव: निजी अनुभव से सामाजिक स्थिति का संबंध दिखाएँ: छिपना, भय और अभाव को युद्ध तथा यहूदी दमन से जोड़ें।

13(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'जूझ' के लेखक के कवि बनने की कहानी का वर्णन कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की काव्य प्रतिभा के विकास में शिक्षक की प्रेरणा, प्रकृति और निरंतर अभ्यास की भूमिका समझनी है।
- कहानी का क्रम कविता के प्रभाव से आरंभ होकर स्वयं रचना और अपनी अभिव्यक्ति पाने तक जाता है।

चरण 1: अध्यापक से काव्य प्रेरणा आनंद के विद्यालय में सौंदलगेकर मास्टर कविता बड़े भाव, लय और तन्मयता से पढ़ाते थे। उनके काव्य पाठ से आनंद को कविता के शब्दों के साथ उसका सौंदर्य और आनंद भी अनुभव हुआ। मास्टर स्वयं कविताएँ लिखते थे और कवियों की चर्चा करते थे। इससे आनंद के मन में विश्वास जगा कि कविता केवल पुस्तक की वस्तु नहीं, अपने आसपास के जीवन से रची जा सकने वाली अभिव्यक्ति है।

चरण 2: प्रकृति और श्रम के बीच अभ्यास खेत में काम करते और पशु चराते समय वह पढ़ी हुई कविताएँ गुनगुनाता था। खेतों, पेड़ों, फसलों और खुले वातावरण में उसे कविता की लय का अभ्यास करने का अवसर मिलता था। वह शब्द और तुक जोड़कर अपनी पंक्तियाँ बनाने लगा। काम की कठिनाई के बीच यह सृजन उसके लिए आनंद का स्रोत बना और उसका अकेलापन कम होने लगा।

चरण 3: मार्गदर्शन से प्रतिभा का विकास आनंद अपनी रचनाएँ सौंदलगेकर मास्टर को सुनाता था। वे उसे प्रोत्साहन देते और रचना को सँवारने का मार्ग बताते थे। इस अभ्यास और आत्मविश्वास से उसकी कल्पना तथा भाषा विकसित हुई। इस प्रकार शिक्षक के प्रेरक काव्य पाठ ने जो बीज बोया, वह प्रकृति के अनुभव, अपने श्रमजीवन और निरंतर रचना के अभ्यास से विकसित हुआ तथा आनंद की कवि बनने की यात्रा आरंभ हुई।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा से आनंद में काव्य रुचि जागी। प्रकृति के बीच कविता गुनगुनाने, स्वयं पंक्तियाँ रचने और शिक्षक के मार्गदर्शन से उसकी कवि प्रतिभा विकसित हुई।

त्वरित सुझाव: क्रम बनाए रखें: मास्टर का काव्य पाठ, खेतों में गुनगुनाना, स्वयं रचना और शिक्षक का प्रोत्साहन।

14. 'जूझ' कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में शिक्षा पाने का संघर्ष व्यक्तित्व के निर्माण का आधार बनता है।
- प्रसंगों के आधार पर परिश्रम, आत्मविश्वास, शिक्षा के प्रति लगन तथा संवेदनशीलता जैसे जीवन-मूल्यों की व्याख्या करनी चाहिए।

चरण 1: कठिनाइयों का साहसपूर्वक सामना 'जूझ' का किशोर नायक पढ़ना चाहता है, किंतु घर की आर्थिक परिस्थितियाँ और पिता का विरोध उसके मार्ग में बाधा हैं। पिता उससे खेती का काम कराना चाहते हैं। वह निराश होकर अपनी आकांक्षा नहीं छोड़ता, बल्कि अपनी बात मनवाने के लिए प्रयास करता है। दत्ता जी राव की सहायता से उसे फिर विद्यालय जाने का अवसर मिलता है। यह प्रसंग आधुनिक किशोर-किशोरियों को सिखाता है कि कठिन परिस्थिति में लक्ष्य छोड़ने के स्थान पर विवेकपूर्ण उपाय खोजने चाहिए और आवश्यकता होने पर उचित व्यक्ति की सहायता लेनी चाहिए।

चरण 2: शिक्षा के प्रति लगन और श्रम का सम्मान विद्यालय में प्रवेश मिलने के बाद भी नायक की जिम्मेदारियाँ समाप्त नहीं होतीं। उसे खेत का काम और पढ़ाई साथ निभाने पड़ते हैं। वह उपलब्ध समय का उपयोग करके अपनी शिक्षा आगे बढ़ाता है। इससे अनुशासन, समय के सदुपयोग और निरंतर परिश्रम की प्रेरणा मिलती है। आज के विद्यार्थी भी संसाधनों की कमी को हार का कारण बनाने के बजाय नियमित अध्ययन और दृढ़ निश्चय से प्रगति कर सकते हैं। नायक का संघर्ष यह भी बताता है कि श्रम से बचकर नहीं, जिम्मेदारियाँ निभाते हुए जीवन सँवरता है।

चरण 3: हीनभावना पर विजय और रचनात्मकता विद्यालय लौटने पर नायक को अपने पहनावे तथा सहपाठियों की प्रतिक्रियाओं के कारण संकोच होता है। फिर भी वह पढ़ाई में रुचि लेकर अपना स्थान बनाता है। मंत्री जैसे परिश्रमी सहपाठी का साथ उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। सौंदलगेकर अध्यापक के काव्यपाठ और प्रोत्साहन से उसके भीतर कविता के प्रति रुचि जागती है। वह प्रकृति और अपने अनुभवों में कविता खोजने लगता है। ये प्रसंग आत्मविश्वास, अच्छी संगति, गुरु के प्रति आदर और अपनी रचनात्मक क्षमता पहचानने का संदेश देते हैं। किशोरों को दूसरों की हँसी से टूटने के बजाय अपनी योग्यता विकसित करनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार 'जूझ' शिक्षा के प्रति अटूट लगन, संघर्षशीलता, स्वावलंबन, परिश्रम और संवेदनशीलता की प्रेरणा देती है। नायक का जीवन बताता है कि उचित मार्गदर्शन और निरंतर प्रयास से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी पहचान बनाई जा सकती है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक जीवन-मूल्य के साथ नायक के संघर्ष, विद्यालय या काव्यरुचि का एक ठोस प्रसंग जोड़कर उत्तर लिखिए।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर उन जीवन-मूल्यों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए जो समय के साथ बदल रहे हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और नई पीढ़ी के माध्यम से बदलते पारिवारिक तथा सामाजिक मूल्यों का चित्रण हुआ है।
- समीक्षा में पुराने मूल्यों की उपयोगिता और उनकी जड़ता, दोनों पर विचार करना आवश्यक है; प्रत्येक परिवर्तन को अच्छा या बुरा मान लेना उचित नहीं।

चरण 1: सादगी से प्रदर्शन की ओर बदलाव यशोधर बाबू सादगी, मितव्ययिता और परंपरागत रहन-सहन को महत्त्व देते हैं। उनके बच्चे आधुनिक जीवनशैली अपनाते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित पार्टी, केक और उपहार उत्सव मनाने के बदले हुए ढंग को सामने लाते हैं। परिवार के लिए यह खुशी बाँटने का अवसर है, किंतु यशोधर बाबू इस वातावरण में सहज नहीं हो पाते। प्रसंग दिखाता है कि उत्सवों में घरेलू आत्मीयता के साथ औपचारिकता और प्रदर्शन का स्थान बढ़ रहा है। फिर भी केवल नया तरीका होने से किसी उत्सव को निरर्थक नहीं कहा जा सकता; उसकी सार्थकता आत्मीयता में है।

चरण 2: सामूहिकता और व्यक्तिगत सुविधा का द्वंद्व यशोधर बाबू के जीवन पर किशनदा का गहरा प्रभाव है। किशनदा के यहाँ रहने और मिल-बाँटकर जीवन बिताने के अनुभव उनके लिए सहयोग तथा अपनत्व के आदर्श हैं। दूसरी ओर, नई पीढ़ी अपनी नौकरी, कमाई और व्यक्तिगत सुविधा को अधिक महत्त्व देती है। बेटे भूषण का अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी करना उसके लिए उपलब्धि है, पर पिता आधुनिक कामकाज और उसकी बड़ी आय को अपने परिचित मानकों से समझ नहीं पाते। इससे स्पष्ट होता है कि सफलता का मूल्यांकन अब परंपरागत नौकरी और वरिष्ठता के स्थान पर आय तथा अवसरों से होने लगा है। आर्थिक उन्नति उपयोगी है, पर उसे संबंधों की आत्मीयता का विकल्प नहीं बनना चाहिए।

चरण 3: आदर, स्वतंत्रता और संवाद की आवश्यकता भूषण पिता को ड्रेसिंग गाउन देता है और सुबह दूध लेने जाते समय उसे पहनने को कहता है। उपहार में स्नेह का भाव हो सकता है, किंतु यशोधर बाबू को पीड़ा होती है कि कोई यह नहीं कहता कि अब दूध लेने का काम बच्चे कर लेंगे। यहाँ बदलता मूल्य केवल पहनावे का नहीं, बुजुर्गों की देखभाल और उनकी भावनाएँ समझने का है। दूसरी ओर, यशोधर बाबू का हर नई बात को संदेह से देखना भी पीढ़ियों की दूरी बढ़ाता है। पत्नी और बच्चे बदलती परिस्थितियों से अधिक आसानी से तालमेल बैठाते हैं। इसलिए बड़ों के सम्मान के साथ नई पीढ़ी की स्वतंत्रता और बदलती आवश्यकताओं को भी समझना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी सादगी, सहयोग और बुजुर्गों के प्रति संवेदना के क्षरण पर विचार कराती है तथा पुरानी पीढ़ी की जड़ता भी दिखाती है। स्वस्थ जीवन-मूल्य वही हैं जिनमें आधुनिकता के साथ आत्मीयता, स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व और परंपरा के साथ संवाद बना रहे।

त्वरित सुझाव: वर्षगाँठ की पार्टी, किशनदा और ड्रेसिंग गाउन के प्रसंगों से मूल्य-परिवर्तन समझाइए तथा दोनों पीढ़ियों की समीक्षा कीजिए।